सफर रोशनी का

साध्वी कुलविभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सफर रोशनी का

साध्वी कुलविभा

जैन विश्व भारती प्रकाशन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं-३४१३०६
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (०१५८१) २२२०८०/२२४६७१
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

सौजन्य : बिजयसिंह, चैनरूप, कमलसिंह, जगतसिंह,
राजेन्द्रकुमार, हरीसिंह, तेजकरण, प्रदीपकुमार,
राजेशकुमार एवं समस्त हिरावत परिवार
(रतननगर, चेन्नई, बैंगलोर, गौहाटी)

प्रथम संस्करण : अगस्त २०११

मूल्य : ३०/-

मुद्रक : पायोराईट प्रिंट मीडिया प्रा.लि., उदयपुर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आशीर्वचन

तेरापंथ के साध्वी समाज का इतिहास गौरवशाली है। इस धर्मसंघ में दीक्षित होने वाली प्रायः साध्वियों ने श्रद्धा, समर्पण, विनय, सहनशीलता, आचारनिष्ठा, अनुशासननिष्ठा, सेवाभावना आदि विशेषताओं के आधार पर आचार्यों के इंगित की आराधना करके अपनी साधना को सफल बनाया।

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (थैलासर) सेवाभावी, स्वाध्यायशीला और कलाकार साध्वी थी। उन्होंने आगम बत्तीसी तथा आचार्य भिक्षु के साहित्य का मनोयोग से स्वाध्याय किया। वृद्ध और बीमार साध्वियों की सेवा के प्रसंग में मनोयोग से सेवा की। धार्मिक उपकरणों के निर्माण में अपने सधे हुए कुशल हाथों का उपयोग किया।

अपने जीवन के सन्ध्याकाल में उन्होंने पूरी जागरूकता के साथ संथारा स्वीकार किया और प्रवर्धमान परिणामों से उसे पूर्णता तक पहुंचाया। उनके संथारे से तेरापंथ शासन की अच्छा प्रभावना हुई।

'सफर रोशनी का' साध्वीश्री सूरजकुमारीजी की संक्षिप्त जीवन गाथा है, जिसको तैयार करने का प्रयास साध्वी कुलविभाजी ने किया है। प्रस्तुत पुस्तिका पाठकों को तेरापंथ की साध्वियों के कर्तृत्व से परिचित कराने में एक खिड़की का काम करेगी, ऐसा विश्वास है।

आत्मा (मेवाड़)
१८ जून, २०११

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सम्पादकीय

आचार्य तुलसी ने ६ सितम्बर, १९८६ साध्वी सूरजकुमारीजी को एक संदेश दिया, उसमें लिखा थाह्न'सूरज ताप और प्रकाश देता है वैसे ही साधु अपने आपको तपस्या से विशुद्ध बनाए और अज्ञान अंधकार को मिटाएं। संभवतः गुरु कि प्रेरणा से प्रेरित होकर ही आपने अंतिम समय में तपस्या प्रारम्भ की। प्रवर्द्धमान परिणामों से आगे बढ़ते हुए २३ की तपस्या में भक्त प्रत्याख्यान (संथारा) किया।

आपका जन्म रतननगर में हुआ। जन्म के समय ज्योतिषी ने कहाह्नजातक बड़ा होनहार है। किंतु यह घर में नहीं रहेगा, संन्यास ग्रहण करेगा। प्रारम्भ में आपको धर्म के प्रति रुचि नहीं थी। किंतु भाई की मृत्यु ने आपके अन्तर मन को झकझोर दिया। आपके मन पर वैराग्य का अंकुर प्रस्फुटित हो गया।

मात्र १२ वर्ष की अवस्था में आपको प्रतिक्रमण का आदेश प्राप्त हो गया। वि.सं. १९९९ में आचार्य तुलसी के मुख-कमल से आपने जैन भागवती दीक्षा ग्रहण की। पंचाचार का विकास करते हुए सेवा, शिक्षा व कला के क्षेत्र में विशेष कीर्तिमान स्थापित किए।

बहिर्विहार में रहने के बाद २८ वर्ष तक पुनः गुरुकुलवास में रहना, उपयोगी बनकर रहना आपके जीवन की विशेष घटना है।

संयम जीवन में आने वाले सम-विषम मार्गों पर आप लक्ष्य की ओर अनवरत बढ़ती रही। नौवें दशक के प्रथम दिन संवत्सर के दिन जन्म ग्रहण करना व उसी दिन सिंहवृत्ति से भक्त प्रत्याख्यान (संथारा) करना भी एक विरल घटना है।

'सफर रोशनी का' पुस्तक में आपके जीवन के बहुमूल्य प्रसंगों को उकेरने का सार्थक प्रयत्न किया गया है। मैंने अंतिम चौदह वर्षों तक निकटता से साथ रहकर यह अनुभव किया कि आप दिल से उदार व सरल थे। स्वास्थ्य की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुकूलता न होने पर भी आपका मनोबल मजबूत था।

स्थिरवास करने के बाद आगम स्वाध्याय के प्रति आपका विशेष रुझान हो गया। आपने अंतिम दशक में चार बार बत्तीसी का पारायण किया व दूसरों को भी समय-समय पर सूत्र स्वाध्याय करवाया।

प्रस्तुत पुस्तक के विषय वस्तु को सात 'विभागों में सुव्यवस्थित किया गया है। प्रथम विभाग में रतननगर के परिचय के साथ जन्म से संन्यास तक की यात्रा की जीवन्त प्रस्तुति है।

द्वितीय विभाग सेवा से प्रारंभ होकर 'सेवा का मेवा' शीर्षक से समाप्त हो जाता है।

तृतीय विभाग कलात्मक जीवन का यथार्थ चित्रण करता है। कला के साथ-साथ समय नियोजन की कला भी इस विभाग में देखी जा सकती है।

चतुर्थ विभाग शिक्षा से संबंधित है। आज से सात दशक पूर्व, स्वतंत्र भारत में अंग्रेजी भाषा के प्रति आकर्षण और वह भी एक साध्वी के मन में अंग्रेजी में बोलने-लिखने की तड़फ होना अपने आपमें महत्त्वपूर्ण बात है।

पंचम विभाग संघ भक्ति व गुरु निष्ठा के दुर्लभ संस्मरणों की धरोहर को समेटे हुए है।

षष्ठ विभाग २००५ से प्रारंभ होकर २००९ में समाप्त हो जाता है। यह समय आपके जीवन का उत्कर्ष काल कहा जा सकता है। यही वह समय है, जिसमें आपने उत्कृष्ट स्वाध्याय किया। संथारे का प्रत्याख्यान कर मृत्यु को उत्सव के रूप में परिणत कर दिया।

सप्तम विभाग में तीन परिशिष्ट है। जिनमें आपके जीवन काल की यात्राओं का, चातुर्मासों का तथा पूज्यवरों के संदेशों का संकलन किया गया है।

गुरुदेव तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण (वर्तमान आचार्य महाश्रमण) और विशेष रूप से साध्वीप्रमुखाश्रीजी के संदेशों को पढ़कर ऐसा लगता है। आप साध्वीप्रमुखाश्रीजी द्वारा निर्दिष्ट कार्य को बड़ी तत्परता से करते थे। साध्वीप्रमुखाश्रीजी के शब्दों मेंह्ण'आपको काम देकर वापिस पूछना नहीं पड़ता कि काम पूरा करने में कितने दिन लगेंगे। हम कल्पना करते यह काम इतने दिनों में पूरा हो जाएगा आप उससे पहले ही उसे पूरा कर देते।

'सफर रोशनी का' पुस्तक सर्चलाईट की तरह पाठक के पथ को प्रशस्त करेगी। ऐसा मेरा विश्वास है। इसे परिष्कृत कर प्रेस तक पहुंचाने में साध्वी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शुभ्रयशाजी के आत्मीय सहयोग को मैं भूल नहीं सकती। उन्होंने बहुत श्रम किया है। अस्तु में उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूं। प्रूफ रिडिंग में साध्वी शुभप्रभाजी के सहयोग के प्रति भी अहोभाव।

इसे सुसज्जित कर पाठकों के हाथों तक पहुंचाने में साध्वीश्री सूरजकुमारीजी के परिवार का व जतनबाई का भी विशेष योग रहा है। भाई प्रमोद की लगन व जैन विश्व भारती की तत्परता से ही यह कृति शीघ्र प्रकाशित हो सकी है।

पूज्यवरों के मौन आशीर्वाद के प्रति मैं कृतज्ञ हूं। साध्वीप्रमुखाश्रीजी की कृपा को मैं भूल नहीं सकती। जिन्होंने दूर बैठे ही आशीर्वचन लिखकर मुझे प्रोत्साहित किया। मेरे भीतर ऊर्जा का संचार किया। इसी प्रकार समय-समय पर आपश्री की प्रेरणा मेरे जीवन निर्माण में योगभूत बने।

गंगाशहर
११ मई, २०११

साध्वी कुलविभा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

प्रथम विभाग

१. रतननगर एवं थैलासर : एक परिचय **११**

१. श्री चम्पालाल हिरावत : एक परिचय ११

२. जन्म से संन्यास की ओर १२

द्वितीय विभाग

२. सेवा

१. अग्रगामी पद की वंदना व सेवा १६

२. विशिष्ट सेवा हेतु प्रस्थान १६

३. भविष्य में भी संघ सेवा हित तैयार रहना है १८

४. संघ के जागरूक प्रहरी १९

५. सेवा का मेवा १९

तृतीय विभाग

३. कला

१. सिखाने की कला २१

२. अल्प काल में कलात्मक कार्य करने की कला २२

चतुर्थ विभाग

४. शिक्षा

१. ज्ञान कंठा दाम अंटा २४

२. युगीन शिक्षा के प्रति आकर्षण २५

पंचम विभाग

५. निष्ठा

१. संघ निष्ठा २७

२. मैं तो चरणों की रज हूं २७

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

३. गुरु शिष्य की इकतारी २८
४. ठाकर है तो कासीद क्या करेगा? २९
५. बुढ़ापा बोझ न बने २९

षष्ठम विभाग

६. यात्रा २००५ से २००९

१. स्वास्थ्य में आरोह-अवरोह ३१
२. किसने सोचा स्वप्न साकार होगा ३२
३. संदेश औषध बना ३३
४. समय आए तो संथारे का भाव रखना ३४
५. सारणा के दुर्लभ क्षण ३६
६. क्रमशः कदम बढ़े ३७
७. विजयश्री का वरण करेंगे ३८
८. सिंहवृत्ति से संथारे का प्रत्याख्यान ४२
९. आलोचना : आंतरिक शुद्धि का उपाय ४४
१०. वीरभूमि में लगा तप का मेला ४५
११. आनंदो मे वर्षति-वर्षति ४५
१२. शोध से बोध संभव ४६
१३. जिनकी स्मृतियां शेष हैं ४८

सप्तम विभाग

परिशिष्ट

१. यात्रा : एक झलक ५०
२. चातुर्मास-प्रवास ५१
३. पूज्यवरों के संदेश ५४

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

१. प्रथम-विभाग

रतननगर एवं थैलासर : एक परिचय

रतननगर और थैलासर दो अलग-अलग गांव है। थैलासर नामक गांव अति प्राचीन काल से आबाद था और अब भी है। यह कब बसा? किसने बसाया तथा इसका नाम थैलासर क्यों रखा गया? ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका सही उत्तर किसी भी स्रोत से नहीं मिल पा रहा है। रतननगर से इस गांव का बहुत गहरा और आदि संबंध हैं। थैलासर और रतननगर एक दूसरे के पूरक है पर दोनों का अलग-अलग अस्तित्व है।

रतननगर को बिसाऊ निवासी सेठ नंदरामजी केडिया ने वि.सं. १९१७ में आबाद किया था। इस धरती पर महर्षिप्रवर श्री मंगलदत्तजी महाराज का पदार्पण हुआ। उन्हें ऐसा अहसास हुआ कि यह धरती रत्नगर्भा है उस समय बीकानेर के महाराजा सरदारसिंहजी शासन करते थे। उनके पिताश्री का नाम श्री रतनसिंहजी था। महाराजा ने अपने पितृचरण के नाम पर रतननगर शहर बसाने की अनुमति सेठ नंदरामजी को प्रदान की तथा राजदरबार से उन्हें अनेकों सुविधाएं राज्य की ओर से प्रदान की।

श्री चम्पालाल हिरावत : एक परिचय

वि.सं. १८१७ में रामगढ़ छोड़कर श्री लक्ष्मणदासजी हिरावत रतननगर बस गए। उनके पांच पुत्रों में श्री भैरूंदानजी एक थे। वे बड़े बलवान पौरुष वाले व्यक्ति थे। उनके पुत्र श्री मानमलजी के दो पुत्रों में एक का नाम चम्पालालजी था। मानमलजी की वैभवता चम्पालालजी को विरासत में मिली। उस वक्त में उनकी मोटरकार, चांदी का रथ, नागौरी बैलों की जोड़ी, घोड़ी एवं ऊंट आदि आस-पास के चौखले में बड़े प्रसिद्ध थे। वे बीकानेर महाराजा के बड़े कृपापात्र थे। महाराजा द्वारा चांदी का कड़ा बख्शीश स्वरूप प्रदान करने पर भी उन्होंने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उसे अस्वीकार कर दिया। राजदरबार में उनका वर्चस्व था। वे बड़े दानवीर थे।

एक बार रतननगर से तीन किलोमीटर की दूरी पर बसा श्योपरा गांव भयंकर आग में प्रायः नष्ट हो गया। चम्पालालजी अपनी कार लेकर गांव पहुंचे। वहां की दयनीय स्थिति देखकर उनका हृदय दया से द्रवित हो गया। सारे गांव के लिए चावल, आटा, दाल, वस्त्र व निवास के लिये चादर की टीन के घर बनाने की व्यवस्था उन्होंने अपनी ओर से की। प्रसिद्ध दानवीर सेठ श्री सोहनलालजी दूगड़ के वे ममेरे भाई थे। गांव में पड़े दुष्काल के दौरान भी पूरे गांव की कर वसूली अपने खजाने से करने का मानस बनाकर उन्होंने बीकानेर नरेश को काफी प्रभावित किया जिससे पूरे इलाके को चुंगी से मुक्ति मिल गई।

जन्म से संन्यास की ओर

राजस्थान के छोटे से भू-भाग में बसा रतननगर जिसे भारत सरकार ने 'हेरिटेज सिटी' में शामिल कर लिया है। उसका कारण है वहां के मन्दिर और हवेलियां, जो वसुधा के वैभव हैं। उन्हीं वैभवशाली हवेलियों में से एक हवेली में वि. सं. १८८७ भाद्रव शुक्ला पंचमी (संवत्सरी) के दिन आध्यात्मिक वैभव प्राप्त करने हेतु आंगन में एक सूरज उतर गया। आसमान से नहीं, मातुश्री हुलासीदेवी की कुक्षि से।

जैन धर्म में संवत्सरी का दिन आध्यात्मिक आलोक को प्राप्त करने का दिन होता है। उस दिन सभी श्रद्धालु आत्मा की आराधना करते हैं। ऐसे पवित्र दिन में घर में नए सदस्य का आगमन कितना आह्लादकारी होता है। यह अनुभव तो वह माता और वह परिवार ही कर सकता है। घर में कोई ज्योति ज्वलित होती है तो मन-आंगन आलोक से स्नात हो जाता है।

श्रीमान चम्पालालजी के घर में पुत्री का आगमन भी ऐसा ही कुछ था। चार पुत्रों के बाद पुत्री सूरज का जन्म लक्ष्मी का अवतार माना गया। पिताश्री चम्पालालजी ने पुत्री का लालन-पालन पुत्रों से भी अधिक लाड-प्यार से किया। घर में लक्ष्मी (वैभव) की कोई कमी नहीं थी किंतु लक्ष्मी (पुत्री) का अभाव था। उस अभाव को सूरज ने सद्भाव में बदल दिया। आपने पिताश्री की चिरसंचित इच्छा की पूर्ति की। आपके ग्रह योग विशिष्ट थे। ज्योतिषियों ने कहाह्न'यह जातक बड़ा होनहार होगा। आगे जाकर पिता का नाम रोशन करेगा।'

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बचपन खेलकूद में बीता। खेल के साथ अध्ययन का क्रम भी जारी था। यद्यपि उस समय लड़कियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी किंतु आप जब अपने भाइयों को अध्ययन करते देखती तो अपने पिताश्री से बार-बार कहती मैं भी अध्ययन करूंगी। आपकी सघन इच्छा देखकर आपको भी अध्ययन करने हेतु पाठशाला में दाखिल करा दिया गया। आप कुशाग्र बुद्धि की धनी थी, जो पाठ पाठशाला में पढ़ाया जाता, आप उसी दिन उसे याद कर लिया करती थी। आपने अध्ययन काल में कभी अध्यापक की कड़ी दृष्टि नहीं देखी। सब ओर से भरपूर स्नेह पाया। इस तरह आपके जीवन का लगभग एक दशक परिवार की छत्रछाया में बड़े ही लाड-दुलार से बीता।

परिवार में नैसर्गिक धार्मिक संस्कार थे। परिवार का हर सदस्य पीढ़ी दर पीढ़ी धार्मिक संस्कारों के रंग से रंगा हुआ था। उस मजीठी रंग की झलक आज चौथी-पांचवी पीढ़ी में भी जीवन्त है। किंतु बालिका सूरज को बचपन में धर्म के प्रति विशेष रूचि नहीं थी। यहां तक कि गांव में चातुर्मास होता तो भी आप दर्शनार्थ नहीं जाती थीं। दूसरे दशक में प्रवेश करने के कुछ दिन बाद आपके जीवन में अचानक एक मोड़ आया। उसका कारण बना आपके भाई तिलोकचंदजी का अचानक स्वर्गवास। भाई के स्वर्गवास का दृश्य देखकर बालिका के मन में संसार के प्रति विरक्ति के भाव उत्पन्न हो गये। आप घंटों-घंटों एकांत में बैठकर जीवन-मृत्यु के बारे में चिन्तन करती रहती। आपके मन में संसार की विचित्रता के संदर्भ में अनेक प्रश्न उमड़ते जिसका समाधान आपको घर में प्राप्त नहीं हुआ। तब आप अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाने के लिए साध्वीश्री की उपासना के लिए जाने लगी।

साध्वियों की सन्निधि में जाने से आपका तत्त्वज्ञान व कंठस्थ ज्ञान सीखने का नित्य क्रम बन गया। आपकी मातुश्री आपकी वैराग्य भावना में बल भरने का अहर्निश प्रयत्न करती थी। पिताश्री को इस बात का ज्ञान आपके जन्म के समय ही हो चुका था। 'जब ज्योतिषी ने कहाह्न'जातक बड़ा होनहार है किन्तु.... कहते-कहते वह रुक गया। तब चंपालालजी ने पूछाह्न'ज्योतिषीजी! आप किंतु, परन्तु क्यों लगा रहे हो? जैसी बात है स्पष्ट कहो।' ज्योतिषी ने कहाह्न'यह जातक घर में नहीं रहेगा, संन्यास लेगा।'

उस समय रतननगर में मुनिश्री केवलचंदजी का चातुर्मास था। प्रतिदिन की तरह शाम के समय पिताजी ने संतों के दर्शन किए। संतों ने सहज भाव से

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कहाह्न'क्यों चम्पालालजी! घर में लक्ष्मी आ गई।' चम्पालालजी ने निवेदन कियाह्न'हां मुनिश्री! लक्ष्मी तो आ गई किंतु.....।' संतों ने पूछाह्न'किन्तु क्या?' मुनिश्री! बात यह है कि यह लक्ष्मी आगे जाकर हमारे घर में नहीं रहेगी। यह संन्यास ग्रहण करेगी।' संतों ने अवसर देखकर कहाह्न'चम्पालाल! यदि यह दीक्षा ले, संयम ग्रहण करे तो तुम मनाही मत करना। संतान का दान, बड़ा दान है, संतों की प्रेरणा से आपके पिताजी ने उसी समय संकल्प कर लिया कि यदि मेरी पुत्री की संयम ग्रहण करने की इच्छा हुई तो मैं इसे संयम ग्रहण करने की आज ही अनुमति प्रदान करता हूं। इससे ऐसा लगता है जिस दिन आपका जन्म हुआ उसी दिन संयम ग्रहण का भी निश्चय हो चुका था।

बचपन में आपको साधु-साध्वियों की सेवा में विशेष रुचि नहीं थी। वैसे आपके घर में धार्मिक संस्कार बहुत अच्छे थे। वे संस्कार आपमें भी थे, पर विशेष लगाव नहीं था। एकाएक आपके संसारपक्षीय बड़े भाई तिलोकचंदजी का स्वर्गवास हो गया। उस समय आपके गांव में साध्वियों का चातुर्मास था। दाह संस्कार करने के पश्चात् पारिवारिकजन धार्मिक संबल प्राप्त करने के लिए साध्वियों के पास पहुंचे। आप भी साथ में थी। धर्म का रहस्य समझाते हुए साध्वियों ने कहाह्न'संसार का स्वरूप ऐसा ही है। इस समय धार्मिक व्यक्तियों की पहचान होती है। धार्मिक वह होता है जो दुःख में से सुख निकाल लेता है। यह भी एक अच्छा कि शादी हुआ शुदा नहीं था। अन्यथा स्थिति और गंभीर बन जाती।' वहां से पारिवारिकजन सभी वापिस घर आ गए। साध्वियों के वे शब्द कानों में गुनगुना रहे थे। आपने अपनी माताजी से पूछाह्न'मां, अगर भइया, शादीशुदा होता तो क्या होता? स्थिति गंभीर कैसे बनती? क्या कठिनाई होती?' मां ने कहाह्न'लाडली! तू नहीं जानती?' हां तभी तो पूछ रही हूं। बेटे! भाभी बनकर आनेवाली किशोरी विधवा बन जाती।' मां! क्या होती है विधवा? उस समय तक आपकी कोई विधवा औरत देखी हुई नहीं थी। इसलिए आप इससे अनभिज्ञा थी। तथापि जिज्ञासा उभरती रही। दूसरे दिन आप अपनी माताजी के साथ साध्वियों के स्थान पर गई।

वहां एक बहिन साध्वियों की उपासना कर रही थी। वह काले कपड़े पहने हुए थी, शायद किसी साध्वी की संसारपक्षीया भाभी थी। मां ने आपको संकेत कर बतायाह्न'बेटी! देखो, यह है विधवा औरत। शादी होने के बाद जिसके पति का स्वर्गवास हो जाता है, उनको ऐसे काले कपड़े पहनने होते हैं।'

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

क्या पति के मृत्यु के बाद ऐसे कपड़े पहनने जरूरी है, आपने पूछाह्न''यदि कोई औरत नहीं पहनना चाहे तो क्या होगा?' मां ने बतायाह्न'नहीं, बेटे! ऐसा मत पूछो।' क्योंकि सामाजिक दृष्टि से ऐसा करना जरूरी है। नहीं तो समाज बहिष्कार कर देता है। बहिष्कृत व्यक्ति समाज से अलग हो जाता है। उसका जीना दुभर हो जाता है।' यह बात सुनकर आपको अच्छा नहीं लगा। आप उस औरत के पास गई। उसे गौर से देखा। इतनी छोटी उम्र, इतना सुन्दर रूप और ऐसे कपड़े। उसे देखते ही आपके किशोर मन पर आघात लगा। आपने मां से पूछा, मां, क्या! कोई ऐसा रास्ता हो सकता है जिससे कभी ऐसे कपड़े नहीं पहनने पड़े। मां ने बतायाह्न'बेटी! जो साध्वी बन जाती है, वह इस लोक व्यवहार से ऊपर उठ जाती है। बस! समाधान हो गया और तत्क्षण हो गया वैराग्य का अंकुर प्रस्फुटित। किसी को कुछ नहीं कहा। आप अंदर ही अंदर दीक्षा तैयारी लेने की करने लगी। साध्वियों के पास जाना, सामायिक करना, थोकड़े कंठस्थ करना यही आपकी दैनिक चर्या बन गई।

वि. सं. १९९८ में पिताश्री ने आचार्यप्रवर से दीक्षा की प्रार्थना की। मंत्री मुनि (मगनलालजी स्वामी) ने फरमायाह्न'चम्पालाल! बस तुम्हारी अर्ज हो गई। बात समझ में आ गई। महासती साध्वीप्रमुखा झमकूजी जैसी साध्वी को संघ को सौंपकर हीरावत परिवार धन्य हो गया। वह हीरावत कुल की, खानदान की पहचान बन गई। झमकूजी के संबंधियों को खड़े होकर अर्ज करने की जरूरत ही नहीं है। बस आपकी अर्ज आचार्यप्रवर के ध्यान में आ गई।' (साध्वीप्रमुखा झमकूजी आपके नातीले थे।)

आचार्यप्रवर एवं महासती झमकूजी व मंत्री मुनि की अनंत-अनंत कृपा से आपको घर बैठे ही प्रतिक्रमण का आदेश हो गया और आचार्यश्री तुलसी ने वि. सं. १९९९ कार्तिक कृष्णा अष्टमी को आपको जैन भागवती दीक्षा प्रदान की। दीक्षित कर आपको साध्वी मनोहरांजी (चूरू) को सौंप दिया। आप लगभग १४ वर्ष तक उनके सान्निध्य में रही। साध्वीश्री की देख-रेख में आपकी संयम चर्या प्रशस्त दिशा में बढ़ने लगी। उनकी प्रेरणा से आपकी अध्ययन और कला में रुचि बढ़ी। आपका सेवा भाव भी प्रशस्य बना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

द्वितीय-विभाग : सेवा

अग्रगामी पद की वंदना व सेवा

आपकी अर्हताओं का अंकन करते हुए २०२८ गंगाशहर में गुरुदेव श्री तुलसी ने आपकी अग्रगण्य के रूप में नियुक्त की। २०२९ में साध्वीश्री संघमित्राजी के साथ आपका सरदारशहर में संयुक्त चातुर्मास हुआ। उस समय आप अस्वस्थ थी। उपचार हेतु सरदारशहर में रहना आपके स्वास्थ्य के लिए कार्यकारी रहा।

तेरापंथ धर्मसंघ की सेवा की व्यवस्था बहुत ही बेजोड़ है। मर्यादा महोत्सव पर सेवा की नियुक्तियां इसका जीवन्त साक्ष्य है। आज भी अग्रगामी पद की नियुक्ति के बाद आचार्यवर उन्हें प्रायः सर्वप्रथम सेवाकेन्द्रों में सेवार्थ योजित करते हैं। धर्मसंघ के साधु साध्वी भी आह्लादपूर्ण चित्त से आचार्य द्वारा की गई नियुक्ति को स्वीकार कर अहोभाव का अनुभव करते हैं।

विशिष्ट सेवा हेतु प्रस्थान

वि. सं. २०३१ में बीदासर में आपको विशिष्ट सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ। हैदराबाद में जोड़ों के दर्द के कारण साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (खाटू) जो मनोहरांजी सुजानगढ़ के साथ थी, दो वर्षों से रूकी हुई थी। वे पैरों से चलने में बिल्कुल असमर्थ हो गई। उनको गुरु चरणों में साधन के द्वारा लाना था। उस समय आपको बीदासर से हैदराबाद जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हैदराबाद के लिए प्रस्थान करने से पूर्व पूज्यवर ने फरमायाह्न'देखो, मैं तुम्हारी यह बड़ी कसौटी की सेवा ले रहा हूं। प्रचार-प्रसार के लिए जाना कोई बहुत बड़ी बात नहीं है किन्तु संघ की सेवा के लिए इतनी दूर भेजना और जाना दोनों ही महत्त्वपूर्ण है। तुम्हारा अहमदाबाद के बजाय हैदराबाद जाना महत्त्वपूर्ण होगा। वहां की साध्वियों को अधिक प्रसन्नता होगी और संघ की शोभा बढ़ेगी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुम्हारा आना भी जल्दी हो जाएगा। मेरा विश्वास है कि मेरे इंगित को समझती हुई तुम वहां का कार्य जिम्मेदारीपूर्वक करोगी।' आचार्यश्री ने पूछाह्न''बोलो! तुम्हारी क्या इच्छा है।'' आपने कहाह्न'भगवान् की जैसी मर्जी, यह शरीर चरणों में समर्पित है।' आचार्यप्रवरह्न'शरीर नहीं, मन क्या कहता है?' आपने निवेदन कियाह्न'भगवन् जैसा फरमाएंगे, जैसी दृष्टि होगी, वैसा ही करने को मैं तैयार हूं। आचार्यश्रीह्न'मेरी दृष्टि तो हैदराबाद की है और मैं कुछ सोच समझकर ही तुम्हें वहां भेज रहा हूं।' हैदराबाद के लिए तैयार हो जाओ।' इस प्रकार फरमाते हुएह्नहैदराबाद में स्थित (साध्वी मनोहरांजी, सुजानगढ़) साध्वियों के लिए लिखा हुआ पत्र आचार्यवर ने स्वयं पढ़कर आपको सुनाया। उसमें आपके लिए लिखे हुए शब्द आचार्य भगवान ने पढ़कर सुनाए।' शिष्या सूरज! (रतननगर) कष्ट सहिष्णु है, मनोबली है, दूसरा सूरज और मिल जाने से बल और बढ़ जाएगा। मैं इनको यहां से भेज रहा हूं। संभव है, यह चातुर्मास इनको खानदेश में करना होगा। अगली साल तुम्हारे पास पहुंच जाएगी। मातुश्री वदनांजी पास में ही विराजमान थी। साध्वीश्री ने उनको वंदना की। आचार्यश्री ने फरमायाह्न'वदनाजी! देखो यह सूरज सतियों की सेवा में हैदराबाद जा रही है। इनके माथे पर अपना हाथ रखो और शुभाशीष दो।' मातुश्री ने माथे पर हाथ रखते हुए कहाह्न'हां बाई जाओ, राजी खुशी जाइज्यो। आचार्यश्री कैवै ज्यूं करीज्यो।' इस प्रकार उस अस्वस्थता की स्थिति में भी मांजी महाराज ने आप पर जो कृपा बरसाई उससे आपके आत्मविश्वास को बहुत बल मिला। आपका हृदय गद्‌गद् हो गया। अपने संस्मरण सुनाते हुए जब कभी आप इस प्रसंग को बताती तो आपके नयन गुरुकृपा की अमृत-वर्षा से सजल हो जाते। आनन्द मुखरित हो जाता।

वि. सं. २०३१ फाल्गुन कृष्णा, १३ के दिन बीदासर में गुरुवर से शुभाशीष प्राप्तकर आप अहमदाबाद होती हुए खानदेश पहुंची। आचार्यप्रवर की दृष्टि के अनुसार वह चातुर्मास आपने खानदेश (भुसावल) में किया। चातुर्मास के पश्चात आचार्यप्रवर की कृपा से आप निर्विघ्न यात्रा कर हैदराबाद पहुंच गई। वहां विराजित साध्वी मनोहरांजी (सुजानगढ़) आदि साध्वियों ने अत्यन्त प्रसन्नता व्यक्त की। स्वागत समारोह मनाया। जिसमें इतर समाज के लोगों ने कहा कि 'यह एक अद्‌भुत बात है। तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य सबका कितना ध्यान रखते हैं। इसका प्रमाण है यह साध्वीजी। इन्होंने भी बहुत बड़ा काम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

किया है। यहां सेवा के लिए इतनी दूर से आई हैं। कम बात नहीं, यह हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं ऐसी सेवा इस संघ में ही होती है।' साध्वीश्री मनोहरांजी ने कहाह्न'पूज्यप्रवर ने हजारों माइल की दूरी से भी कितनी बड़ी कृपा कराई, इनको यहां भेजकर मुझे निहाल कर दिया।' साध्वी सूरजकुमारीजी (खाटू) ने कहाह्न'गुरुकुलवासिनी साध्वी को पाकर मैं बहुत प्रसन्न हूं। अब आप मुझे जल्दी गुरुचरणों में पहुंचाने की कृपा करें।' इस प्रकार आपके वहां जाने से संघ की बहुत शोभा बढ़ी।

हैदराबाद से विहार कर एक चातुर्मास बीच में (औरंगाबाद) किया। वि. सं. २०३३, राजलदेसर में साध्वी सूरजकुमारीजी (खाटू) को साधन के द्वारा लेकर आप गुरुचरणों में पहुंची। बीदासर से हैदराबाद तक आपकी २४०० माइलेज की यात्रा हुई। उस समय आचार्यप्रवर ने महती कृपा करके आपके उत्साह को बढ़ाया। उसके साथ पारितोषिक रूप में ९ बारियां तथा ५१ दिन की ६ विगय बक्शीश की।

भविष्य में भी संघ सेवा हित तैयार रहना है

वि. सं. २०३७, आचार्यप्रवर ने महत्ती कृपा कर तारानगर से संदेश देकर आपको साध्वी रायकुमारीजी (चाड़वास) को लाने के लिए तोषाम भेजा। उस समय दो साध्वियां आप और मंगलप्रभाजी राजगढ़ से एक दिन में ही तोषाम पहुंच गए। साध्वीश्री रायकुमारीजी को 'तोषाम' से राजगढ़ लाए और साध्वीश्री जुहारांजी (बीदासर) को शार्दूलपुर से सरदारशहर साधन के द्वारा पहुंचाया। गुरु दृष्टि के अनुसार साध्वियों को गन्तव्य स्थल पर पहुंचाकर आपने लाडनूं में पूज्यवर के दर्शन किए। उस समय आचार्यप्रवर ने संतों के सामने फरमायाह्न'देखो ये हमारी साध्वियां संतों से भी अधिक हिम्मत वाली हैं। ये दो ही नौ जितनी हैं। ज्योंही मैंने इनको कहा तुमको तोषाम जाना है तो बिना किसी ननुनच के राजगढ़ से तोषाम गई। वहां से मेरी दृष्टि के अनुसार साध्वी रायकुमारीजी को राजगढ़ व साध्वी जुहारांजी को शार्दूलपुर से सरदारशहर पहुंचाकर आज यहां पहुंची है। बहुत अच्छा काम किया है। मैं इन दोनों को १०१ कल्याणक व ४ बारियां बक्शीश करता हूं। भविष्य में भी ऐसे ही संघ के कार्यों के लिए तैयार रहना है।' इस प्रकार आपको कई बार कई साध्वियों को अपने कंधों पर व हस्तचालित साधन के द्वारा लाने का अवसर मिला है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संघ के जागरूक प्रहरी

सैद्धांतिक व वैचारिक मतभेद को लेकर जब रंगलालजी आदि संत संघ से अलग हुए, उस समय गुरुदेवश्री तुलसी ने भिलवाड़ा से सुजानगढ़ तक साध्वीश्री मनोहरांजी (चूरू) के ग्रुप को नियोजित किया। साध्वी सूरजकुमारीजी उनके सिघाड़े में थी। रंगलालजी आदि संत लोगों को भरमाते। आप सैद्धांतिक तथ्यों के आधार पर लोगों को समझाती। उस समय तार्किकता के साथ लोगों के सन्मुख यथार्थ का प्रतिपादन करती। प्रवाहपाती व दिग्भ्रान्त लोगों का स्थिरीकरण कर आपने संघ की बड़ी सेवा की। लोगों में संघ व संघपति के प्रति निष्ठा पैदा की। उन्हें सही मार्ग बताया। भीलवाड़ा से सुजानगढ़ तक की आपकी वह यात्रा बहुत ही महत्त्वपूर्ण रही। संघीय दृष्टि से आपने जिस जागरूकता का परिचय दिया, गुरु दृष्टि की आराधना की, वह सबके लिए अनुकरणीय है।

सेवा का मेवा

सन २००१ में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का चातुर्मास बीदासर था। आप जब राज में थी उस समय आपको शासन गौरव साध्वीश्री कमलूजी की सन्निधि में रहने का और सेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। वही अवसर बीदासर में पुनः प्राप्त हो गया। संथारे के लगभग २० दिनों में आपने उनकी खूब सेवा की। आप दिन-रात साध्वीश्री कमलूजी के पास ही रहती। साध्वीप्रमुखाश्रीजी फरमाते कि 'आप साध्वी कमलूजी के पास हैं, इसलिए हमें चिंता नहीं है।'

एक बार आचार्यश्री साध्वीश्री कमलूजी को सेवा कराने के लिए थान-सुथान भवन में पधारे। तब आचार्यश्री ने साध्वीश्री कमलूजी से पूछाह्न'बोलो, कुछ कहना है क्या?' तब साध्वीश्री ने कई बातें निवेदित कीं। और यह भी कहा कि गुरुदेव! साध्वी सूरजकुमारीजी की सेवा में एक साध्वी देनी चाहिए। आचार्यश्री ने पूछा कि सूरजकुमारीजी (जयपुर) बहन के लिए कह रही हो क्या? तब साध्वीश्री कमलूजी ने कहाह्नहीं, मैं साध्वी सूरजकुमारीजी (थैलासर) के लिए निवेदन कर रही हूं। साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (थैलासर) ने संघ की खूब सेवा की है और मेरी वैसे तो सभी साध्वियां खूब सेवा कर रही हैं लेकिन साध्वी सूरजकुमारीजी विशेष सेवा कर रही है।' उसी समय आचार्यश्री ने नाम नोट कर लिया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन २००१ का चातुर्मास सम्पन्न होने वाला था। उसके दो दिन पहले साध्वीश्री कमलूजी के निवेदन के अनुसार आचार्यश्री की आज्ञानुसार साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने सूरजकुमारीजी की सेवा के लिए मुझे (कुलविभा) वन्दना करवाई। मैं उस समय में बीदासर समाधि केन्द्र में साध्वी चान्दकुमारीजी के साथ चाकरी में थी। इसलिए साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने फरमायाह्न''जब चाकरी सम्पन्न हो जाए, तब तुम्हें साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (थैलासर) की सेवा में रहना है।''

आप एक सेवाभावी साध्वी थी। समय पर खरी बात कहने वाली साध्वी थी। आपमें सेवा का गुण बहुत था। जब कभी किसी के संथारा, संलेखना होता, आप वहां पर जमकर बैठ जाती। दिन रात एक कर देती। उन्हें खूब ज्ञान सुनाती और उनकी भावधारा को बढ़ाती रहती। आलोयणा कराने का आपका बेजोड़ तरीका था। इस तरह संथारा-संलेखना वाले को आप खूब चित्त समाधि पहुंचाती।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तृतीय-विभाग : कला

कला सिखाने की कला

चाकरी सम्पन्न होने पर मुझे आपकी सेवा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जबसे मैं आपकी सेवा में आईं, आपका एक लक्ष्य बन गया कि मुझे तैयार करना है। अपनी जो भी कला है इनको सिखानी है। आप इस तरफ ध्यान देने लगी। जब मैं आपके पास आईं, उस समय मुझे रंग-रोगन का कार्य नहीं आता था। आपने मेहनत की और मुझे धीरे-धीरे सिखाना प्रारम्भ किया। कुछ ही महीनों में आपने मुझे मुख-वस्त्रिका बनाना सिखा दिया। सात-आठ वर्ष में गुरुदेव के रात में काम में आने वाली मुख-वस्त्रिका भी आपने सिखा दी। २००५ का मर्यादा महोत्सव लाडनूं था। उससे पहले आपने कई चीजें भेंट के लिए तैयार करवाई। जैसे रजोहरण-१, प्रमार्जनी-३, दिन की मुख-वस्त्रिका, रात की मुख-वस्त्रिका आदि।

आपकी भावना थी कि मैं कला में परिपक्व बनूं। इसलिए आपने आपना प्रयत्न चालू रखा और जब-जब आचार्यश्री बीदासर पधारते। आप समय-समय पर काफी मात्रा में भेंट तैयार करवाती। यह आपकी आस्था और सोच का विकास था। जब गुरुदेव २००७ में बीदासर पधारे उस समय आपनेह्न

१. पुट्ठा-७, २. हरी पाटी-४, ३. रात की मुखवस्त्रिका-१०५, ४. दिन की मुखवस्त्रिका-८०, ५. लुंकार-७, ६. रजोहरण-१, ७. प्रमार्जनी-२, ८. घोटाई और फांटिया निकाले हुए ३५० पन्ने श्री चरणों में भेंट किए।

सन २००९ बीदासर मर्यादा महोत्सव के अवसर पर भी आपने निम्नलिखित उपकरण भेंट किएह्न

मुखवस्त्रिका दिन की-१५, मुखवस्त्रिका रात की-४१ रजोहरण-१, हरी पाटी-४, जाल का प्याला-१।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यह मात्र बीदासर में २००५ से २००९ तक भेंट की गई सामग्री की सूची है। इससे पहले भी आपने रजोहरण, पात्रियां, रात व दिन की सैकड़ों मुखवस्त्रिकाएं भेंट कीं। सैकड़ों पन्नों की घोटाई, फांटिया निकालना, हड़ताल बनाना आदि कार्य आप अपने हाथों से करती। इस तरह गुरु सेवा में रहते हुए आपने अपनी उपयोगिता सिद्ध की।

हमने देखा चाहे डोरी सांकली बनानी हो या नाम लिखना हो। आप हर समय तत्पर रहती। रात की मुखवस्त्रिका बनाने में आप माहिर थे। योगक्षेम वर्ष में आपने अनेक साध्वियों को अपनी कला सिखाने का प्रयत्न किया। मुखवस्त्रिका बनाना, डोरी बंटना, रात की मुंहपत्ती बनाना, फांटिये निकालना, रजोहरण बनाना, बांधना आदि कार्य आपने दूसरों को सिखाने का प्रयास किया। आपके मन में अनेक साध्वियों को तैयार करने की गहरी तड़फ थी।

अस्वस्थता की स्थिति में भी जब कभी मैं कुछ पूछने के लिए आपके पास में आती तो आप तत्काल बैठकर मुझे बताने लग जाती। बताते हुए वह काम भी करने लग जाती और उसमें इतनी लीन हो जाती कि अपनी अस्वस्थता को भी भूल जाती।

अल्प काल में कलात्मक कार्य करने की कला

लिपिकला में विकास करने हेतु आपने करीब दो पुस्तकें लिखी। सूक्ष्म अक्षरों में अंग्रेजी भाषा में ८०,००० अक्षरों का एक निबंध एक पत्र-पन्ने पर लिखा। आचार्यप्रवर के कार्योपयोगी प्याला, ग्लास एवं टोपसियों पर सूक्ष्म अक्षरों में जाल किया। अनेक चित्रों के पाने भी बनाए, रंगाई, सिलाई, मुखवस्त्रिका एवं रजोहरण बनाने की कला भी यथाशक्य प्राप्त की। १३ दिनों में ६ लाल पात्रियों की रंगाई एवं २ दिनों में रजोहरण बांधने का कार्य संपन्न किया तथा वि. सं. २०१८ से ५४ की साल तक आचार्यश्री की रात की मुखवस्त्रिकाओं का काम करने का आपको सौभाग्य प्राप्त हुआ। कला के क्षेत्र में आपका अच्छा विकास थाहरजोहरण, प्रमार्जनी, मुखवस्त्रिका, पात्री, टोपसी, प्याला, गिलास, तुम्बा, हिंगलु, हड़ताल, सफेदा बनाने में आप दक्ष थी।

एक दिन में साध्वियों के सहयोग से ५०० मुखवस्त्रिका थापना एवं ५०

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रजोहरण की धुलाई करना, संघ सेवा और कला के प्रति आपका अत्यधिक रुझान प्रकट करते हैं।

आप कला के प्रति भी जागरूक थी। नई-नई कलात्मक चीजें सिखाने में भी प्रवर थे। साधु जीवन में काम आने वाली प्रत्येक कला का आपने विकास किया और उन सबमें दक्षता हासिल की। आप एक पुरुषार्थी साध्वी थी और जिस किसी कार्य को साध्वीप्रमुखाश्री ने आपको दे दिया। उस काम को आपने पूरी निष्ठा के साथ किया। सरकारी कार्य के प्रति आपकी पूरी निष्ठा थी। साध्वीप्रमुखाजी भी फरमाते कि 'आपकी सरकारी काम के प्रति निष्ठा बेजोड़ है।' यही बात आपने अंतिम समय में मुझे शिक्षा फरमाते हुए कहाह्न'धण्यां को कोई भी काम आजावै तो माथै नहीं राखणो, बेगो कर दे देणो।' आप सिर्फ सरकारी कार्य के प्रति ही जागरूक नहीं थी। संघ के प्रत्येक साधु-साध्वी द्वारा दिए गए काम को भी उसी तत्परता से करती थी। साध्वियां सोचती कि अभी तो पात्र नाम देने के लिए आपको देकर आएं हैं। लेने के लिए कुछ समय बाद जाएंगे। वे लेने आएं उससे पहले ही आप नाम लिखकर उन्हें भेज देती या तैयार रखती। आपकी इस तत्परता को देखकर साध्वियों दांतों तले अंगुली दबाने लगती थीं।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चतुर्थ-विभाग : शिक्षा

ज्ञान कंठा दाम अण्टा

आचार्यश्री तुलसी के युग से तेरापंथ में साध्वी समाज की शिक्षा व्यवस्था पर ध्यान दिया गया। दीक्षा लेने के बाद आपने-दाम अंटा ज्ञान कंठा' वाली कहावत चरितार्थ की। कंठस्थ ज्ञान में आपने कीर्तिमान बनाया। पूज्यवर जो भी नई रचना करते। आप प्रायः उसे कंठस्थ कर लेती। उस समय साधु-साध्वियों की विशिष्ट शिक्षा के लिए ७ वर्ष का पाठ्यक्रम बनाया गया था। आपने भी ७ वर्ष तक पूरी परीक्षा दी थी। मतिज्ञान के साथ-साथ आपका श्रुतज्ञान भी निर्मल था। अपनी बात दूसरे के गले उतारना जानती थी। कला व सेवा के साथ-साथ आपके ज्ञान का क्षयोपशम भी अच्छा था। छोटी वय में दीक्षा और अल्पकाल में अनेक सूत्रों व थोकड़ों को कंठस्थ कर लियाह्न

१. आयारो २. दशवैकालिक ३. उत्तराध्ययन ४. बृहत्कल्पसूत्र ५. नंदीसूत्र ६. दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र ७. भ्रमविध्वंसनम्।

संस्कृत, प्राकृत की नींव मजबूत करने के लिएह्न

१. कौमुदी, २. तुलसी मंजरी ३. नाममाला।

भक्ति रस में लीन होने के लिए व वैराग्य भाव से ओतःप्रोत हो संगीत का रसास्वादन करने के लिएह्न

१. शांतसुधारस भावना २. सिन्दूर-प्रकरण ३. चौबीसी ४. आराधना ५. भक्तामर ६. कल्याणमंदिर ७. उपसर्गहर स्तोत्र ८. घंटाकर्ण ९. अष्टकम् ४ १०. मुकुलम् ११. शिक्षा षण्णवती १२. कर्त्तव्यषट्त्रिंशिका १३. झीणी चरचा २५ थोकड़े।

बचपन की यह ज्ञान पिपासा प्रौढ़ावस्था व वृद्धावस्था में भी आपकी सहचारी रही। आपने वृद्धावस्था में भी निम्नांकित बोध प्रबोध को मुखस्थ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कियाह्न१. आचार बोध २. विचार बोध ३. तेरापंथ प्रबोध ४. व्यवहार बोध ५. तुलसी प्रबोध।

इनमें कुछ को तो बीदासर में स्थिरवास होने के बाद कंठस्थ किया था। स्थिरवास के बाद आगम बत्तीसी का स्वाध्याय करने में भी बहुत रुचि हो गई। एक बार आपने मुझे कहाह्न'बीदासर आने के बाद मैंने चार बार बत्तीसी का पारायण कर लिया। जैसे-जैसे अध्ययन करती हूं, आस्था वर्धमान होती जाती है। स्वाध्याय के प्रति अनन्य रुचि का होना मेरे लिए विशेष लाभकारी है। इसे मैं वीरभूमि की उपलब्धि मानती हूं।' मैने अनुभव किया स्वाध्याय आपका प्रिय विषय था। जब कभी आपकी संसारपक्षीया बहन जतनबाई सेवा में आती। आपकी स्वाध्याय में तत्परता और बढ़ जाती। थोकड़ों का ज्ञान आपकी तरह जतनबाई को भी था। सह स्वाध्याय से आप अपने भीतरी रसायन बदलकर अत्यन्त आह्लाद का अनुभव करती थी। मणि की मां (बीदासर निवासी हंसराजजी बांठिया की धर्मपत्नी) आपको स्वाध्याय कराने में सहयोगी बनती। जो स्वाध्याय प्रेमी होता, वह आपका प्रिय बन जाता।

युगीन शिक्षा के प्रति आकर्षण

प्रारंभ में साध्वी सूरजकुमारीजी को साध्वीश्री मनोहरांजी (चूरू) के पास रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। साध्वीश्री मनोहरांजी आदि साध्वियां आपका पूरा ध्यान रखती थी। आपकी पढ़ाई-लिखाई पर भी उन्होंने पूरा ध्यान दिया। जब कभी राज में रहकर परीक्षा देनी होती उस वर्ष के चातुर्मास में वे आपको वहां छोड़ देती, जब चातुर्मास संपन्न होता तब वापस आकर ले जाती। पढ़ाई के लिए एक वर्ष साध्वी किस्तूरांजी की सन्निधि में कई साध्वियां रहीं, तब आपने भी एक वर्ष उनके पास सरदारशहर रहकर अध्ययन किया। साध्वी मनोहरांजी आपको अध्ययन करवाने के प्रति बहुत जागरूक थी।

आप साध्वीश्री मनोहरांजी के साथ में थी। एक बार आप चित्तौड़ का किला देखने के लिए गई। वहां पर विदेशी पर्यटक आए हुए थे। वे सभी अंग्रेजी में बात कर रहे थे। उन्होंने आपसे कुछ प्रश्न पूछे। आपको अंग्रेजी नहीं आती थी। तथा न ही उनके द्वारा पूछे गए प्रश्न समझ में आ रहे थे। आपके और उन विदेशी भाइयों के बीच में सेवा करनेवाले एक भाई ने अनुवादक का कार्य किया। आप अपने ठिकाने आई तब आपका चेहरा मायूस था। जब

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी मनोहरांजी ने पूछाह्न'आज चेहरा उतरा हुआ क्यों है?' तब आपने कहाह्न'किले में विदेशी व्यक्तियों ने दर्शन किए। वे अंग्रेजी में वार्ता करना चाहते थे। यदि आज मुझे अंग्रेजी भाषा आती तो मैं स्वयं उनके प्रश्नों का उत्तर अंग्रेजी में देती, कोई दूसरा माध्यम नहीं बनता।' तब साध्वीश्री मनोहरांजी ने पूछा कि क्या तुम्हारी अंग्रेजी सिखने की इच्छा है? आपने तत्काल उत्तर दियाह्न'हां' एक बार चेहरे पर पुनः प्रसन्नता आ गई।

उस प्रवास काल में उस जिले का सबसे बड़ा वकील रोज दर्शन करने आता। एक दिन जब वे दर्शन करने आए तब साध्वी मनोहरांजी ने वकील साहब के सामने सारी बातें रखते हुए कहा कि क्या आप साध्वी सूरजकुमारीजी को अंग्रेजी सिखा सकते हैं? उसकी हार्दिक इच्छा है कि मैं अंग्रेजी का ज्ञान करूं। बात ही बात में वकील साहब ने उन्हें अंग्रेजी का अध्ययन कराने का वचन दे दिया। समय तय किया गया। वकील साहब कोर्ट बंद होते ही सीधे ठिकाने पर आपको अध्ययन कराने के लिए उपस्थित हो जाते। आप भी पूरी मेहनत से अध्ययन करती। आपने उसी चातुर्मास में अंग्रेजी लिखना और बोलना सीख लिया। आज से ६५ वर्ष पूर्व कोई साध्वी अंग्रेजी भाषा सीखने की बात करे और उनको अध्ययन करवाने की कोई बुजुर्ग साध्वी व्यवस्था करे, उसके लिए उन्हें समय दे। अतीत का यह विरल संस्मरण वर्तमान के लिए सुखद अनुभव है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पंचम-विभाग : निष्ठा

संघ निष्ठा

एक बार पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी ने आपको सिसोदा चातुर्मास करवाने के लिए भेजा। आपने संघ और संघपति के प्रति समर्पण भाव का परिचय दिया। संघ और संघपति से नाता जोड़ने वाली कहावत को चरितार्थ किया। घटना क्रम इस प्रकार हैह्न

साध्वी मंजुलाजी जो संघ से अलग हो गए थे, उन्होंने एक पत्र लिखकर किसी भाई के साथ आपके पास भेजा। जब वह भाई ठिकाने में आया, उस समय आप किसी काम से नीचे आई हुई थीं। वहां पर अन्य कोई साध्वियां नहीं थीं। भाई ने पत्र आपको दिया और उसका उत्तर जानना चाहा। आपने उस पत्र को पढ़ा। उसमें आपसे तेरापंथ धर्मसंघ छोड़ने के लिए कहा गया था तथा गुमराह करने की बातें लिखी गईं थीं। संघ के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा था। उसी समय आपने तत्काल एकटुक उत्तर दियाह्न'मेरे प्राण चले जाएं पर मैं इस संघ को छोड़कर कहीं भी नहीं जाऊंगी। मेरे लिए संघ और संघपति ही सबकुछ है।' इतना कहकर आप ऊपर आ गयी और उस पत्र को सुरक्षित रख दिया। इस संदर्भ में किसी से चर्चा तक नहीं की। जब आपने आचार्य श्री तुलसी के दर्शन किए। तब पत्र श्रीचरणों में निवेदन किया। साधु-संतों की संगोष्ठी में पूज्यवर ने पत्र का वाचन करवाया और आपके समर्पण भाव की सराहना की।

मैं तो चरणों की रज हूं

वि. सं. २०३६ लुधियाना चातुर्मास के लिए जाते समय आप किसी गांव में रुकी। शाम के समय आप और साध्वी मधुस्मिताजी पंचमी समिति के लिए जा रही थीं। वहां पर मधुमक्खियों का छता टूटा हुआ था। देखते-देखते मधुमक्खियों ने साध्वियों पर आक्रमण कर दिया और बुरी तरह से आपको

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

काटने लगी। दोनों साध्वियों की आवाज सुनकर वहां से गुजर रहे एक भाई ने काले रंग की कंबल ओढ़ा दी। बड़ी हिम्मत करके जैसे तैसे आप दोनों जहां साध्वीप्रमुखा विराजती थी वहां पर आई। साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने देखते ही तत्काल दोनों साध्वियों के शरीर पर गोबर का लेप करने का निर्देश दिया। साध्वीप्रमुखाश्रीजी के द्वारा निर्दिष्ट लेप करने पर आपको तत्काल राहत महसूस हुई। मधुमक्खियों के काटने पर शरीर में जो जलन हुई थी वह भी ठीक हो गई। दो, तीन दिन बाद साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने फरमायाह्न'साध्वी सूरजकुमारीजी का तो रूप ही बदल गया। पूरा मुंह सूज गया। शरीर में जलन भी काफी रही फिर भी इन्होंने हिम्मत से काम लिया। विहार का क्रम भी जारी रखा यह सीखने की बात है। इनमें शारीरिक कष्ट सहिष्णुता अच्छी है।'

आपने निवेदन कियाह्न'मैं तो आपके चरणों की रज हूं। जो कुछ सीखा है, गुरु के प्रताप से सीखा है। आपके सामने मेरी सहने की शक्ति कुछ नहीं है।'

गुरु शिष्य की इकतारी

बीदासर में स्थिरवास होने के बाद भी साध्वीप्रमुखा महाश्रमणीजी की आप पर अनन्त अनुकम्पा रही। आपको लगता था कि साध्वीप्रमुखाश्रीजी के संदेश ही उनकी सन्निधि का आभास करा रहे हैं। आपने एक बार कहाह्न'इससे पहले मुझे कभी इतने संदेश नहीं मिले। आज भी कोई समस्या आती है तो संदेश के माध्यम से समाधान प्राप्त हो जाता है। यह सब साध्वीप्रमुखाश्रीजी की कृपा का ही सुफल है।'

उस कृपा ने ही आपको राजकीय कार्यों की स्थिरवास में भी सहभागिता प्रदान की। वहां से आपको जैसा निर्देश मिलता, आप उसे लगन के साथ पूरा करने का प्रयत्न करती। जैसे मुखवस्त्रिकाएं बनाना, पट्टा बनाना, पाना की घोटाई करना, फांटियादि निकालना, तुलसी वाङ्मय की हस्तलिखित प्रतियों को मिलाना आदि।

साध्वीप्रमुखाश्रीजी का आप पर कितना विश्वास था। बिना किसी प्रकार की पूछताछ किए सतियों के साथ आपके लिए करणीय जो भी काम होता, वह भेज देते। आपकी यह नैसर्गिक प्रकृति रही कि साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने आपको जो निर्देश दिया, उसको आपने पूर्णता की दहलीज तक पहुंचाया। काम को

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यथाशीघ्र संपन्नकर गुरु चरणों में समर्पित कर देना आपकी हॉबी थी। इस पर आपको सात्विक गौरव था और गर्व भी। इसे वे गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व साध्वीप्रमुखाश्रीजी के शुभ आशीर्वाद का चमत्कार मानती थी। गुरु शिष्य की इकतारी का परिणाम बताती थी।

ठाकर है तो कासीद क्या करेगा?

सन १९९१ का मर्यादा महोत्सव बगड़ी में था। उस समय गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी ने साध्वीप्रमुखाजी की चाकरी लाडनूं फरमाई। उस समय साध्वी-प्रमुखाश्रीजी ने आपको फरमाया कि आप आगे जाकर फाल्गुन कृष्णा पंचमी के दिन चाकरी स्वाकीर कर लेना। आपके साथ में साध्वीश्री सुमतिश्रीजी, विवेकश्रीजी, अनुशासनश्रीजी व पूनमप्रभाजी बगड़ी से रवाना हुए। बगड़ी से आचार्यश्री, साध्वीप्रमुखाश्रीजी का मंगल पाठ सुनकर आपने विहार कर दिया और लम्बे-लम्बे विहार करते हुए आप लाडनूं पहुंचने वाली थी। अचानक आपके घुटनों में भयंकर दर्द आ गया जिसके कारण रास्ते में रूकना पड़ा।

उस समय शिक्षा केन्द्र में साध्वी विमलप्रज्ञाजी थी। उनके साथ साध्वी मुदितयशाजी, शुभ्रयशाजी व साध्वी कान्तयशाजी लाडनूं से साधन लेकर आपकी अगवानी में गयी। आप साधन से लाडनूं पधारी। कुछ दिनों बाद जब गुरुदेव पधारे तब सबके सामने आपसे पूछा कि रास्ते में कोई तकलीफ तो नहीं हुई? आपने कहा कि नहीं, गुरुदेव की कृपा से आनन्द रहा। तब साथ वाली साध्वियों ने कहाह्न'गुरुदेव हमारे साथ तो कोई कासीद भी नहीं था।' गुरुदेवश्री तुलसी ने आपकी ओर इंगित करते हुए फरमाया कि ठाकर तो तुम्हारे साथ था फिर कासीद की क्या जरूरत थी।'

बुढ़ापा बोझ न बने

वि. सं. २०५४, बीदासर समाधि केन्द्र में आपके घुटनों में अधिक दर्द तथा चलने में कठिनाई होने के कारण गणाधिपति श्री तुलसी ने आपको स्थिरवास करवाया।

गुरुदेव तुलसी चातुर्मास करने के लिए लाडनूं से गंगाशहर पधार रहे थे। उसी समय आपको बीदासर में समाधि केन्द्र में रखा। तब गुरुदेवश्री तुलसी ने साध्वियों की सामूहिक गोष्ठी में आपके लिए फरमायाह्न'यह साध्वी बहुत काम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

की है। मैं इसे यहां छोड़कर जा रहा हूं क्योंकि इसके पैरों में तकलीफ है। इसने संघ का बहुत काम किया है और आज भी यह कार्यक्षम है किंतु घुटनों की तकलीफ के कारण यहां स्थिरवास करवा रहे हैं। साध्वीप्रमुखा इनसे यहां भी समय-समय पर कार्य करवाती रहे। यह इनकी भावना है। यह भी अच्छी बात है। इस प्रकार की भावना रखने से बुढ़ापा बोझ नहीं बनता। यह सबके लिए सीखने की बात है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

षष्ठ-विभाग : यात्रा २००५ से २००९

स्वास्थ्य में आरोह-अवरोह

सन २००५, लाडनूं मर्यादा महोत्सव में आप गुरुकुलवास में रही तब तक सिर्फ घुटनों के दर्द के अलावा आपको कोई बीमारी नहीं थी। लाडनूं से आने के तीन-चार महीनों के बाद अचानक आपके हार्ट में दर्द हुआ। पहले सोचा कि गैस का दर्द होगा। दवाई दी गई लेकिन कोई असर नहीं हुआ। दर्द धीरे-धीरे बढ़ने लगा। तब ई. सी. जी. करवाई गई। रक्त टेस्ट करवाया गया। हार्ट व शुगर की बीमारी आई। हल्का हार्ट अटैक था और शुगर एक साथ बढ़कर ५०० हो गई। डॉक्टर को भी आश्चर्य हुआ कि इतनी शुगर में जीवित कैसे? लेकिन उस समय आयुष्य प्रबल था। डॉ. रतनलाल रांका (बीकानेर) का इलाज प्रारंभ किया गया। दवाई तो काफी लेनी पड़ती लेकिन इलाज लागू पड़ गया। गाड़ी लाइन पर चलने लगी। बाद में मस्से की तकलीफ बढ़ गई। रक्त स्राव बहुत होता। इतना रक्तस्राव होने पर भी आपका मनोबल मजबूत था। आपके सामने चिकित्सा हेतु वाहन का प्रयोग कर अन्यत्र जाने का सुझाव आया। आपने कहाह्नयहां पर जो इलाज संभव हो, वह मैं कराने को तैयार हूं लेकिन वाहन का उपयोग कर अन्यत्र नहीं जाऊंगी। मुझे अन्यत्र जाकर इलाज नहीं करवाना है। मैंने पूरी जिन्दगी पैदल यात्रा की है। आज थोड़ी सी जिन्दगी के लिए गाड़ी में बैठूं, यह मुझे मान्य नहीं है।' साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने अपने संदेश में लिखाह्न'चिकित्सा की दृष्टि से कहीं जाने की या ऑपरेशन कराने की मानसिकता नहीं है। वास्तव में कष्ट सहिष्णु साधक ही ऐसी बात सोच सकता है। आपका मनोबल अच्छा है और अच्छा बना रहे।'

साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने अपने संदेश में डॉ. घोड़ावत से परामर्श करने के लिए कहा। डॉ. घोड़ावत का इलाज चला लेकिन बिना ऑपरेशन कोई लाभ नहीं हो रहा था। रक्त स्राव और अधिक मात्रा में होने लगा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अभयराजजी बैंगानी ने सुझाव दिया कि आप अंग्रेजी दवाई को छोड़कर एक बार होमियोपैथिक इलाज करवाकर देखें। शायद काम कर जाए। डॉक्टर मेरी जानकारी में है। कहें तो आज ही दर्शन कराता हूं।

होम्योपैथिक दवाई लेने की उनकी मानसिकता हो गई और केन्द्र व्यवस्थापिका की आज्ञा लेकर डॉक्टर के लिए अभयराजजी से कहा गया। उसी दिन डॉक्टर विपिन बिहारी (सुजानगढ़) ने दर्शन किए। शुभ का योग था और डॉ. विपिन बिहारी ने बवासीर के लिए जो दवाई दी, वह इतनी जल्दी असर करेगी किसी ने सोचा भी नहीं था। होम्योपैथिक की सिर्फ दो खुराक में रक्त स्राव लगभग ठीक हो गया। डॉक्टर ने ६ महीने तक उस दवाई को चालू रखने के लिए कहा ६ महीने तक दवा लेने के पश्चात अंतिम समय तक वापस एक दिन भी मस्से की तकलीफ नहीं हुई। आपकी होम्योपैथिक पर आस्था हो गई और डॉ. विपिन बिहारी की दवाई लेने लगी।

आपका शुगर कभी कम, कभी ज्यादा रहता। शुगर के अप डाउन के कारण आप दो बार कॉमा में चली गई। पहली बार बेहोशी रही और दूसरी बार तीन घंटे तक यह स्थिति रही।

रक्त स्राव अधिक होने के कारण एक समस्या और खड़ी हो गई जो अंतिम समय तक बनी रही। वह यह कि आपके दोनों घुटने रुक गए। चलना फिरना बन्द हो गया। धीरे-धीरे खड़ा होना भी भारी हो गया। सारा काम बिस्तर पर ही होता। इस बात की आपके भीतर बहुत तकलीफ थी कि मुझे बहुत सेवा लेनी पड़ती है। उस समय मैं कहती कि यदि सेवा देती हूं तो कोई बड़ा काम नहीं करती। आपने मुझ पर कितना श्रम किया है। मुझे पैरों पर खड़ा किया है। अच्छा है, मुझे ऋण से उऋण होने का अवसर मिला है। आपने जितना मुझ पर श्रम किया, उतना मैं कुछ भी नहीं कर पा रही हूं।

किसने सोचा स्वप्न साकार होगा

आचार्यश्री महाप्रज्ञ सन २००७, थली से विहार कर मेवाड़ मारवाड़ की यात्रा के लिए पधारे, तब मन में यह था कि अभी तीन-चार साल तक दर्शन नहीं होंगे। लेकिन गुरुदेव के अस्वास्थ्य के कारण वह यात्रा स्थगित कर दी गई। गुरुदेव जयपुर की ओर पधारे। तब से आपके मन में एक तड़प जागी कि सन २००९ का मर्यादा महोत्सव बीदासर हो और मुझे भी सेवा दर्शन का लाभ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मिले। इसलिए आपने पूरे समाधिकेन्द्र की ओर से पत्र लिखकर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री, साध्वीप्रमुखाश्रीजी, मुख्य नियोजिका को सन २००९ का मर्यादा महोत्सव बीदासर कराने का निवेदन किया और बीदासर के श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित कर के संघ के रूप में जयपुर अर्ज करने के लिए कई बार प्रेरणा दी। उस समय तेरापंथ सभा बीदासर के अध्यक्ष श्रीमान बाबूलालजी सेखानी थे। बाबूलालजी सेखानी आपके संसारपक्षीय भानजे भी थे। जब बाबूलालजी ने अर्ज करने में थोड़ी ढील बरती तो आपने बाबूलालजी से कहाह्न'बाबूलाल! मेरे मरने के बाद मर्यादा महोत्सव करवाएगा क्या?' इस प्रकार सबको प्रेरित करने में आपने महती भूमिका निभाई। शायद ऐसा लगता है आपके अंतराय कर्म क्षीण हुए। गुरुदेव और साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने कृपा की वर्षा की और आपने अंतिम समय में दर्शन सेवा का अच्छा लाभ कमाया। सन २००९ का मर्यादा महोत्सव बीदासर में गुरुदेव ने करवाकर आपको भी निहाल कर दिया।

संदेश औषध बना

आपके भीतर की आवाज जो पहले दस्तक दे चुकी थी, उसने अपना रंग दिखाना प्रारम्भ किया। गुरुदेव के बीदासर प्रवेश से पूर्व ही आपके दोनों पैरों में नीचे अंगुलियों से लेकर घुटनों तक आगे पीछे दाद हो गए। सिर्फ दाद ही नहीं, दाद में पस इतनी ज्यादा हो गई कि दिन में कभी-कभी तो दो-दो बार पट्टी करनी पड़ती। आपके असातवेदनीय कर्म का उदय कुछ ज्यादा था। कभी कुछ और कभी कुछ। वह तो पूरा ठीक ही नहीं हुआ, उससे पहले ज्वर ने पकड़ लिया। ज्वर ने पकड़ा तो ऐसा पकड़ा कि अंतिम श्वास तक साथ रहा। चैत्र महीने में आपको बुखार प्रारम्भ हो गया। बुखार मलेरिया बताया गया। वैसे तो साध्वीप्रमुखाश्री आपको दर्शन देने रोज पधारती लेकिन जब-जब ज्यादा बुखार हो जाती, आपके तकलीफ ज्यादा हो जाती तब-तब साध्वीप्रमुखाश्री आपको दिन में दो बार भी दर्शन देने पधार जाती।

आपके रोम रोम में साध्वीप्रमुखाश्री के प्रति श्रद्धा भक्ति थी। आधी से ज्यादा बीमारी साध्वीप्रमुखाश्रीजी के दर्शन या फिर साध्वीप्रमुखाश्रीजी के संदेशों से ठीक हो जाती। इतना विश्वास था आपका। विश्वास हो भी क्यों नहीं, साध्वीप्रमुखाश्री के वचनसिद्धि है। आपश्री के वचन से सब ठीक हो जाते हैं। एक बार आपके लू का प्रकोप बहुत ज्यादा था। साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने तब आपको संदेश भिजवायाह्न

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी सूरजकुमारीजी!

गर्मी के तीखे तेवरों ने आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर दिया है। ऐसा बीदासर के श्रावकों द्वारा ज्ञात हुआ। तावड़ा जब अपना रंग दिखाता है या रौब जमाता है तब क्या हालत होती है, अनुभव करने वाला ही जानता है। उचित उपचार के साथ जागरूक रहें। इसकी दवा संभव है अब जल्दी ही उपलब्ध हो जाए। देखें प्रकृति कब मेहरबान होती है। अपनी साधना, जप, ध्यान, स्वाध्याय के प्रति सजग रहते हुए स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

१ जुलाई **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
भिवानी

जैसे ही आपको साध्वीप्रमुखाश्रीजी का यह संदेश सुनाया गया वैसे ही पता नहीं वर्षा कहां से आई। संदेश सुनाने से पहले आकाश में एक भी बादल नहीं था। जैसे ही साध्वीप्रमुखाश्रीजी का यह वाक्य पढ़ा गया, देखते हैं प्रकृति कब मेहरबान होती है।' लगभग दो घण्टे तक जमकर वर्षा हुई।

इस प्रकार साध्वीप्रमुखाश्रीजी के सन्देश ने आपके लिए औषध का काम किया।

आपको बुखार ज्यादा हुई उस समय कृपा करके युवाचार्यश्री भी दो बार दर्शन देने पधारे। आपको सेवा करवाई। इस प्रकार कभी कम, कभी ज्यादा बुखार निरन्तर ही रहने लगी। शाम के समय में बुखार ज्यादा हो जाती। कभी एक, कभी दो इस प्रकार चलता रहता। मलेरिया का कोर्स करवाया गया। मलेरिया का पहला कोर्स मार्च महीने में किया। धनराजजी बैंगानी के पुत्र राजू बैंगानी ने भी दवा की दृष्टि से बहुत ध्यान दिया। फिर भी कोई फायदा नहीं हुआ। बुखार उतरने का नाम ही नहीं ले रही थी। साध्वीप्रमुखाश्रीजी इस बुखार से चिंतित थी। यूरिन टेस्ट करवाया गया लेकिन फायदा नहीं हुआ। इधर गुरुदेव के विहार का समय नजदीक आने लगा। उधर आपके अंतः करण से मानो कोई आवाज उठने लगी। जब कभी कोई बात करता तब आप कहते कि अब मेरा क्या भरोसा, कब सौ वर्ष आ जाए।

समय आए तो संथारे का भाव रखना

मई महीने के प्रारंभ में वापस मलेरिया का कोर्स कराया गया। लेकिन बुखार नहीं उतरी। साध्वीप्रमुखाश्री ने बहुत ही कृपा बरसाई। विहार से पहले

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आपको काफी समय दिलाया, सेवा करवाई। कई बार सामूहिक सेवा भी करवाई। विहार से पहले जब साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने समय दिया, सेवा करवाई। उस समय साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने एक बात यह भी फरमाईद्ध'आप समय आए तब संथारा-संलेखना का भाव रखना।' आपके मन में साध्वीप्रमुखाश्रीजी के वचनों के प्रति सहज श्रद्धा-भक्ति थी। साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने जब कभी कोई काम फरमा दिया, आप जल्दी-जल्दी उस काम को पूरा करने का प्रयत्न करती। तो आपने उन्हीं वचनों को भी अपने जीवन में जल्दी उतारना चाहा।

२७.५.०९, वैशाख शुक्ला तृतीया (अक्षय तृतीया) के दिन साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने सबको आशीर्वाद प्रदान कर लाडनूं चातुर्मास के लिए विहार कर दिया। २९.५.२००९ को थान सुथान से सभी समाधि केन्द्र की साध्वियां तेरापंथ भवन में पधार गई। यहां आने के बाद डॉ. विपिन बिहारी की होम्योपैथिक दवा प्रारम्भ की गई लेकिन बुखार ठीक नहीं हुआ। फिर भी आपकी स्वाध्याय के प्रति रुचि बढ़ती गई। मन में एक तड़प जागी कि मैंने बत्तीसी जीवन में चार बार पढ़ी है और अब मुझे पांचवी बार पढ़नी है। पुस्तकें भी मंगवाई। सूत्र पढ़ना शुरू कर दिया। सुबह के समय लगभग ८ से ९ बजे तक स्वयं पढ़ते और मणि की मां को सुनाते। दोपहर में भी यदि थोड़ा ठीक रहता तो आप स्वयं पढ़ना शुरू कर देती। शाम के समय केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वीश्री नगीनाजी आपको लगभग आधा घण्टा सुनाती। इस प्रकार कम समय में भी आपने भगवती भाष्य का तीसरा-चौथा खण्ड पूरा पढ़ा और नंदी सूत्र व बृहत्कल्पभाष्य पढ़ा। सूत्र के स्वाध्याय के प्रति आपका मन बहुत लालायित रहता। लेकिन बुखार न टूटने पर आपकी शक्ति धीरे-धीरे क्षीण होने लगी। एक जुलाई के बाद स्वतः स्वाध्याय का क्रम टूट गया। दूसरे कोई स्वाध्याय करवाते तब आप पूरी जागरूकता से सुनती।

१० जून २००९, आषाढ़ कृष्णा तृतीया आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस के दिन आपने उपवास किया। मन में था कि ठीक तो होता नहीं है। अब मुझे अपनी आत्मा का कल्याण करना है। आगे बढ़ने का मन था। शायद इतना जल्दी योग नहीं था। इसलिए पारणा करवा दिया। उसके बाद में आपको दवाई के प्रति अरुचि पैदा होने लगी। युवाचार्यश्री, साध्वीप्रमुखाश्री आपके स्वास्थ्य के बारे में पूरी जानकारी रखते। आपकी बुखार कम नहीं हुई। साध्वीश्री नगीनाजी ने युवाचार्यश्री से निवेदन करवाया कि लगभग चार महीनों

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

से न तो बुखार कम पड़ रहा है और न जी घबराना कम हो रहा है। दवाई कोई काम नहीं कर रही है। तब युवाचार्यश्री ने डॉ. घोड़ावत को दर्शन करने के लिए कहा।

२५ जून २००९ को डॉ. घोड़ावत ने बीदासर दर्शन किए। डॉ. घोड़ावत ने दस दिनों का कोर्स दिया। यूरीन इन्फेक्शन का और तीसरी बार मलेरिया का। इस प्रकार दस दिनों में लगभग ४० इंजेक्शन और १०-१५ टेबलेट्स प्रतिदिन लेना। कोर्स चालू किया गया। इतने भारी इंजेक्शन और खाने के प्रति अरुचि। आहार चलता नहीं। दूध आदि तरल द्रव्य भी नहीं लेती। इससे पेट में काफी गर्मी हो गई और लीवर पर भी काफी असर हुआ। दस दिन पूरे होने पर फिर पांच दिन का कोर्स बताया गया। तब आपने मना कर दिया और दवाई नहीं ली। दवाई और खाने पीने के प्रति आपकी अरुचि बढ़ने लगी। अन्न के प्रति लगभग अरुचि हो गई। पूरे दिन में चाय और दूध को मिलाकर लगभग एक आधा पाव। इससे ज्यादा कुछ भी नहीं चलता। जी मचलना प्रतिदिन बढ़ने लगा। साध्वी नगीनाजी व मेरे द्वारा बार-बार कहने पर एक बार वापिस होम्योपैथिक दवाई शुरू की। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। श्रावण कृष्णा एकम ८.७.०९ से लगभग आपका आहार नहीं के बराबर होने लगा। ८.७.०९ से १.८.०९ तक लगभग २५ दिनों में सिर्फ एक चपाती जितना अन्न लिया और अन्य तरल पदार्थ भी बहुत कम लेती थी। इन दिनों में आपने लगातार ५ एकान्तर उपवास किए और २ बेले किए। पारणे के दिन भी सिर्फ तरल द्रव्य ही लेती तथा अन्न बिलकुल नहीं लेती।

सारणा के दुर्लभ क्षण

१४.७.०९ को युवाचार्यश्री ने कृपा करके कन्हैयालालजी छाजेड़ (श्रीडूंगरगढ़) को बीदासर भेजा। आपके स्वास्थ्य की पूरी जानकारी लेने के लिए फरमाया और यह भी मानसिकता जानने के लिए कि आप दूसरी जगह जाकर इलाज करवाएंगी क्या? आपने स्पष्ट मना कर दिया। कहा मैं किसी हालत में वाहन का प्रयोग करना नहीं चाहती।' उस दिन भी आपके उपवास था। बैठने की शक्ति नहीं थी। सोए सोए सेवा करवाई और कहाह्न'मुझसे होता है उतना बास व्रत कर रही हूं। अब बस मुझे यही करना है।' उसी दिन आपके संसारपक्षीय भतीजे चैनरूपजी हिरावत सेवा में आए हुए थे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एक बार पुनः दवाई बंद कर दी। आप कहतीह्नमेरे अब दवाइयों से कुछ नहीं होगा। मेरे कोई दवाई काम नहीं करेगी। लेकिन मेरे निवेदन पर एक बार बीकानेर से डॉ. रांका को बुलाकर दिखाया गया। डॉक्टर ने चैक करने के बाद बताया कि किडनी काफी डाउन हो चुकी है। लीवर में इन्फेक्शन है। उन्होंने कहाह्नएक बार मैं दस दिन की दवाइयां देता हूं, उनसे ठीक हो जाएं तो आगे दवाई लेना है अन्यथा अब कोई दवाई नहीं है। बीदासर में रहते हुए कोई इलाज नहीं हो सकता। आपने साध्वियों का मन रखने के लिए दवाई शुरू की। लेकिन उसका भी कोई असर नहीं हुआ। बुखार, जी घबराना, भूख नहीं लगना पूर्ववत ही रहा। फिर भी पांच दिन दवाई ली। कोई लाभ नहीं होने से आपने दवाई बंद कर दी। कहाह्नदवाई का कोई असर तो होता नहीं, रुपये में एक आना भी नहीं तो फिर मैं दवाई क्यों लूं। अब तो मुझे साध्वीप्रमुखाश्रीजी के फरमाए अनुसार घंटे दो घंटे के त्याग में सजगता रखनी है।'

क्रमशः कदम बढ़े

आपने २.८.०९ को तपस्या प्रारम्भ की। उस दिन श्रावण शुक्ला द्वादशी थी। साध्वीश्री कमलूजी की मासिक पुण्यतिथि थी। तपस्या प्रारंभ की उस दिन आपने भी नहीं सोचा था कि मुझे संथारा-संलेखना करना है। आपके मन में यही था कि घंटे दो घंटे के त्याग से आगे बढ़ना है। तेला होने के बाद चौले के दिन आपसे कहा गया कि आप पारणा कर लीजिए। तब आपने कहा कि 'हां, मैं पारणा करूंगी।' जब मैंने कुल्ला के लिए मंजन दिया। आपने अपनी अंगुली पर मंजन रखा। न जाने आपके भीतर कौनसी शक्ति जागी, कौनसी अन्तरमन की आवाज उठी। आपने कहाह्न'पारणा तो करती हूं लेकिन मुझसे कुछ नहीं खाया जाएगा।' तब मैंने कहा कि सिर्फ द्रव्य लगाने के लिए मैं आपको पारणा नहीं कराऊंगी। आप न तो इधर के रहेंगे ना उधर के। तब पता नहीं, आपने किस आत्मशक्ति से उस मंजन को फेंकते हुए कहा कि मुझे दो घंटे तक तीन आहार का त्याग है। बस क्रम चल पड़ा तपस्या का। आपके मन में यही था कि साध्वीप्रमुखाश्रीजी के फरमाए अनुसार घंटा दो घंटा त्याग से आगे बढ़ना है। पांच की तपस्या के दिन साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने सन्देश भेजा। उसमें लिखा हुआ था कि 'साध्वी सूरजकुमारीजी (थैलासर) के आज पांच दिन की तपस्या है। घंटा दो घंटा का त्याग करके आगे बढ़ रहे हैं। यह प्रशस्त क्रम है।'

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आपसे जब यह पूछा गया कि 'आप कहते हैं कि मुझे तपस्या करनी है तब आप घंटे दो घंटे का त्याग क्यों करती हैं? एक साथ उपवास क्यों नहीं पचखते हैं?' तब आपका उत्तर यही होता कि मुझे साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने जैसा फरमाया है, वैसा करना है। यह सन्देश मिलने के बाद में तो आप कहते कि देखो 'साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने घंटे दो घंटे के त्याग को प्रशस्त क्रम बताया है।'

तपस्या एक-एक दिन करके आगे बढ़ रही थी। जब कोई पूछता कि आप कितने की तपस्या करेंगी तो आपका उत्तर होता कि जब तक होती है तपस्या, तब तक मैं कर रही हूं। मुझसे नहीं होगी तो मैं पारणा कर लूंगी।

विजयश्री का वरण करेंगे

गुरुदेव, युवाचार्यश्री और साध्वीप्रमुखाश्री की ऊर्जा, शक्ति और आशीर्वाद से ही सारा क्रम चल रहा था लेकिन एक अदृश्य या अप्रत्यक्ष शक्ति भी काम कर रही थी। सहयोग मिला था। वह अदृश्य शक्ति थी आपके बड़े भाई बालचंदजी हिरावत की। जो इस समय संसार में नहीं है। पितरजी के रूप में देव हैं। वे आपको सहयोग दे रहे थे।

१० दिन की तपस्या के दिन आपके संसारपक्षीय भतीजे प्रदीप हीरावत (पितरजी महाराज के पुत्र हैं) के घर (बैंगलोर में) एक आवाज आई कि अब भुआसा महाराज आहार नहीं करेंगे। इधर आपके मन में एक डर था कि संथारा लंबा न आ जाए। संथारा लम्बा आए उसकी कोई चिंता नहीं, संथारे में उपद्रव न हो जाए, ऐसा डर था। इसलिए १२ की तपस्या तक आपका पक्का भाव नहीं था कि मैं संथारा करूं। १२ की तपस्या के दिन मुझसे आपने कहा कि आज मेरे १२ की तपस्या हो गई। मेरा जिदोरा बहुत होता है। जी बहुत घबराता है, बैचेनी बहुत ज्यादा रहती है। इस प्रकार तपस्या आगे कैसे की जा सकती है? पितरजी महाराज कुछ बोलकर कहे तो मनोबल बढ़ सकता है। तब मैंने कहा कि पितरजी महाराज को यदि पारणा कराना होता तो कह देते। आप पितरजी महाराज की बात को छोड़े और अपनी आत्मा की आवाज को सुनें। आप अपनी शारीरिक स्थिति को देखें और यह चिन्तन करें कि पारणा करने के बाद क्या मुझे आहार में रुचि होगी या नहीं। आहार न चले तो पारणा करने का कोई फायदा नहीं। जी घबराना तो खाते थे, तब भी होता था और अब क्या पता पारणा करेंगे, तब जीदोरा अधिक होगा तो। १२ दिनों की तपस्या कोई

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कम तपस्या नहीं है। वापस १२ दिन भारी पड़ेंगे और आप गहराई से चिन्तन कर लें। आप कहेंगे तो मैं कल पारणा करा दूंगी। दूसरे दिन सूर्योदय के पश्चात मैंने कहा कि पारणा कर लीजिए। जिदोरा ज्यादा होता है, मन नहीं है तो आगे तपस्या करनी कोई जरूरी नहीं है। तब आपने शायद रात को आत्म चिन्तन किया होगा। आपने उत्तर दिया कि अब मुझे पारणा नहीं करना है। मुझे तपस्या चालू रखनी है।

१६ की तपस्या तक आप घंटे दो घंटे के त्याग के क्रम से आगे बढ़ रही थी। आपके परिवार में वैसे सभी में धार्मिक संस्कार अच्छे हैं। प्रेरणा भी अच्छी रही। चैनरूपजी हिरावत और प्रदीप हिरावत ने आपको काफी प्रेरित किया आपकी आगे की यात्रा के लिए। वैसे तो आपने तपस्या प्रारंभ की उसके तीन दिन पहले ही विजयसिंहजी हिरावत और जतनबाई (संसारपक्षीय बहन) ने सेवा प्रारंभ कर दी थी। ज्यों-ज्यों तपस्या आगे बढ़ रही थी, परिवारिकजन दर्शन करने के लिए आने लगे। आपके जिस दिन १३ की तपस्या थी उस दिन प्रदीप हीरावत ने दर्शन किया। प्रदीप ने आपसे एक प्रश्न किया कि आप कहते हैं कि मैं पारणा करूंगी नहीं और संथारा के लिए भी आप मना कर रही हैं। आप इस बीच की स्थिति में क्यों है? तब आपने उत्तर दियाह्न'भाई संथारे का काम कठिन है।' तब प्रदीप ने कहा कि काम कठिन तो है पर आप साथ में यह भी फरमाते हैं कि मैं अब पारणा नहीं करूंगी। मैंने उनको बताया किह्नइनके मन में एक भय है, यदि वह निकल जाए तो शायद संथारे के लिए तैयार हो जाएं। आपमें मनोबल बहुत ऊंचा है। भावधारा धीरे-धीरे विशुद्धतम होती जा रही है। आत्मा के प्रति जागरुक हैं। रोजाना पांच महाव्रतों में हुए दोषों की आलोयणा लेती है। आज यह तपस्या भी ऊंचे मनोबल के कारण ही हो रही है। इतना जिदोरा, जी घबराना, बुखार, बेचैनी, घाव आदि काफी तकलीफ होने के बावजूद भी आपके मुंह से उफ तक नहीं निकली। सिर्फ डर तो इतना ही है कि यदि संथारा लम्बा आए तथा उसमें यदि कोई उपद्रव हो जाए तो मेरे परिणाम विशुद्ध रहे या न रहे और मुझे आराधक पद की प्राप्ति हो या न हो तब क्या होगा? उस समय जतनबाई भी वहां सेवा कर रही थी। वे प्रदीप और आपकी बात सुन रही थी। प्रदीप ने उस समय तो इतना ही कहाह्न'भुआसा महाराज! उपद्रव की बात को छोड़ दें, आप अपने मनोबल जगाएं।' तब आपने कहा भाई मनोबल मेरा मजबूत है गुरु की शक्ति मेरे साथ है और साध्वीप्रमुखाश्रीजी की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शक्ति भी मेरे साथ है। मुझे कोई डर नहीं है। इतना तो पक्का है कि मैं पारणा नहीं करूंगी।' जतनबाई ने अपने स्थान पर जाने के बाद अपनी छोटी बहन पान्नाबाई (मद्रास) को फोन किया। पान्नाबाई के मुंह पितरजी महाराज बोलते हैं कि जतनबाई ने पूछा कि महाराज के लिए पितरजी महाराज क्या कहते हैं? उन्हें उपद्रव होने की आशंका है। इतने में पितरजी महाराज ने उत्तर देते हुए कहा कि 'कोई उपद्रव नहीं होगा। मेरा पूरा सहयोग है।' आपको जब इस बात का पता चला तो आपके मन का डर निकल गया। इतने लम्बे संथारे में शारीरिक कष्ट तो बहुत था लेकिन अंतिम समय तक उनके कोई उपद्रव नहीं हुआ।

जतनबाई ने आपको कहाह्न'आप संथारा कर लीजिए।' कोई उपद्रव नहीं होगा, शायद उससे पहले ही आपने संथारे का निर्णय ले लिया। प्रदीप हिरावत को भी कुछ आभास होता है। प्रदीप हिरावत ने १४ की तपस्या के दिन, सूर्योदय के समय भुआसा महाराज के दर्शन किए और वहीं ध्यान मुद्रा में बैठ गए। ध्यान सम्पन्न होने के बाद मैंने प्रदीपजी से पूछा कि ध्यान में क्या देखा। उसने उत्तर दिया कि मेरे ध्यान में २३ और २६ की संख्या आ रही है। २३ की संख्या अभी प्रगाढ़ बन रही है। इसलिए ऐसा लगता है कि भुआसा महाराज २३ तारीख को या फिर तपस्या के २३वें दिन संथारा लेंगे। प्रदीप दो दिन सेवा करके वापस रवाना हो गया।

सतरह की तपस्या में आपने अपने मन में संथारा करना है, ऐसा पक्का निर्णय कर लिया। उस दिन आपने पूरे दिन का प्रत्याख्यान भी एक साथ में किया। सतरह की तपस्या के दिन शाम को मुझसे कहा कि अब मुझे संथारा करना है। मैं जागृत अवस्था में संथारा करना चाहती हूं। तुमने मुझे सहयोग दिया है, मेरी भावधारा को बढ़ाया है और बढ़ाना है। अब मेरे से कुछ होता नहीं। अब तो बस एक ही काम करना है, आत्मा का कल्याण करना है। गुरुदेव से आज्ञा मंगवा दो। साध्वीश्री नगीनाजी को बुलवाया और संथारे की बात कही एवं आज्ञा मंगवाने के लिए कहा। तब साध्वीश्री नगीनाजी ने कहाह्न'अभी इतनी जल्दी क्या है। तपस्या चालू है ही। समय आएगा तब संथारा करवा दिया जाएगा। तब आपने कहा कि समय का क्या पता। मुझे तो जागृत अवस्था में ही संथारा पचखना है। आपने अपने दोनों हाथों की मुट्ठियों को भींचकर कर कहाह्नयदि ६ महीने भी निकले तो मेरा मन मजबूत है। आप

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कृपाकर आज्ञा मंगवा दें।'

उधर मद्रास से पान्नाबाई (संसारपक्षीय बहन) के मुंह से पितरजी महाराज ने आपके संथारे के लिए 'जीत फते होसी' यह एक वाक्य कहा। वास्तव में पूरा संथारा आपका जीत फते ही था।

अठारह की तपस्या के दिन साध्वीश्री नगीनाजी ने लिखित रूप में आपके ज्ञातिजनों के साथ में अर्ज करवाई। आपने भी अपनी भावना लिखकर निवेदन करवाई, जो इस प्रकार थीह्न

आदरास्पद साध्वीप्रमुखाश्रीजी के चरणों में नम्र निवेदनह्न

साध्वीप्रमुखाश्रीजी! मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानती हूं कि मेरे मस्तक पर मातृहृदया साध्वीप्रमुखाजी का हाथ है। जीवन के ७९ वर्ष मैंने खूब ठाटबाट से जीए। गृहस्थ जीवन भी खूब ठाट-बाट से जीया। नन्दन वन जैसे सुखों का अनुभव किया और करूं भी क्यों नहीं? मुझे ऐसा तेरापंथ धर्मसंघ मिला। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री और साध्वीप्रमुखाश्रीह्नइन तीन-तीन निधियों की मुझे छत्रछाया मिली। साध्वीप्रमुखाश्रीजी! अब मैं जीवन के अंतिम पड़ाव में हूं। यह तपस्या भी आपश्री की शक्ति, ऊर्जा के बिना संभव नहीं है। आज आपश्री की मुझे शक्ति, ऊर्जा मिल रही है। उसी शक्ति, ऊर्जा से मैं आगे बढ़ रही हूं और दिन-प्रतिदिन मेरी भावधारा बढ़ती चढ़ती जा रही है। मैंने अपने आत्मबल को तोला है। श्रीचरणों में अनशन करने की आज्ञा प्रदान करने की मांग कर रही हूं। धीरे-धीरे मेरी शक्ति क्षीण होती जा रही है। मेरे शुगर भी है। पता नहीं किस समय क्या घटित हो जाए। मैं अपनी पूरी जागरूकता के साथ अनशन करना चाहती हूं। आपश्री मुझसे परिचित हैं। मेरा मनोबल पक्का है। यदि ६ महीने भी निकल जाएं तो मुझे कोई चिंता नहीं। आपश्री का बृहद्हस्त मेरे मस्तक पर है। आपश्री की शक्ति काम कर रही हैं। आपश्री के चरणों में यही निवेदन कि अब मुझे अनशन करने की आज्ञा प्रदान कराने की कृपा करवाएं।

१९.८.२००९ चरण रज

बीदासर **साध्वी सूरजकुमारीजी (थैलासर)**

जब ज्ञातिजन और बीदासर के कुछ भाई आपकी भावना को लेकर लाडनूं पहुंचे और आचार्यश्री, युवाचार्यश्री और साध्वीप्रमुखाश्रीजी के चरणों में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भावना रखी। पूज्यवरों ने आपकी भावना को जानकर आपको संथारा कराने की आज्ञा प्रदान कर दी।

साध्वी नगीनाजी के लिएह्न

साध्वी सूरजकुमारीजी (थैलासर) को उपयुक्त समय में तिविहार संथारा पचखाया जा सकता है। दो-चार दिन और देखा जा सकता है। यदि जल्दी पचखाना आवश्यक लगे तो वैसा भी किया जा सकता है।

जैन विश्व भारती, लाडनूं आचार्यश्री की निश्रा से
१९.८.२००९ **युवाचार्य महाश्रमण**

वीरभूमि बीदासर में उस दिन छत्तीस कॉम उपस्थित थी। पूरे शहर में विशेष सूचना प्रसारित की गई। आपके संसारपक्षीय ६ भतीजे, ९ भतीजे की बहुएं, बहिनें, भानजे, भानजी आदि ४०-४५ पारिवारिकजन उपस्थित थे। भरी सभा में आपने जिस उत्साह के साथ संथारा पचखा, वह विलक्षण घटना थी। सभी श्रावक-श्राविकाओं की जबान पर यही भाव उभर रहा था कि आज का संथारा तो ऐतिहासिक संथारा है।

आपका उस दिन का उत्साह देखने लायक था। सुबह सवा आठ बजे तब से आप कहने लगी कि कब पचखाएंगे। देर क्यों कर रहे हैं? आपके संथारा पचखने का समय युवाचार्यश्री ने सवा दस बजे फरमाया था।

अन्य लोग संथारा क्या होता है? जानते ही नहीं थे। वे बहुत उत्सुकता के साथ समय से पहले ही मघवा समवसरण में उपस्थित हो गए। पूरा स्थान खचाखच भर गया।''

सिंहवृत्ति से संथारे का प्रत्याख्यान

संथारा की आज्ञा आने पर आपको चेहरे पर विशेष रौनक आ गई। मानो जीवन का सार मिल गया। जीवन की अमूल्य निधि मिल गई। आपने कहाह्न'आदेश आ गया, अब देर क्यों?' साध्वी नगीनाजी व मैंने कहा कि आपको संथारा भी मुहूर्त्त देखकर पचखाएंगे। प्रत्याख्यान करवाएंगे। मुहूर्त्त दिखाया गया। संयोग ऐसा बना कि आपका जन्मदिन संवत्सरी का था। आप उसी दिन इस संसार में आएं और आहार प्रारम्भ किया तथा संथारे का प्रत्याख्यान करने का मुहूर्त्त भी संवत्सरी के दिन ही निकला। आपने जिस दिन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आहार लिया, ७९ वर्षों के बाद उसी दिन जीवनभर के लिए आहार का प्रत्याख्यान कर दिया। संवत्सरी के दिन आपको संथारा पचखाया गया। उस दिन आपके २३ की तपस्या थी। यानी संलेखना के २२ दिन और २३वें दिन संथारे का प्रत्याख्यान किया। प्रदीप की बात मिल गई कि '२३ तारीख को संथारा पचखेंगे या फिर २३ की तपस्या के दिन।' २३ की तपस्या के दिन आपने भरी सभा में संथारा स्वीकार किया।

समय सवा दस बजे का था और आपको लग रहा था कि सवा दस बजे ही नहीं रहे। २४.८.२००९ संवत्सरी का दिन, सुबह के नौ बजकर २० मिनट पर साध्वी गवेषणाश्रीजी आपके पास आईं। उन्होंने आपसे कुछ प्रश्न किए, आपने उनका उत्तर दियाह्न

'म्हारी कोई शक्ति नहीं है। मुझे गुरुदेव, युवाचार्यश्री, महाश्रमणीजी की अनन्त कृपा प्राप्त हुई है जिससे मैं इस आत्म-यज्ञ के लिए तैयार हूं।' दस बजे आपको कमरे से बाहर मंच पर लाया गया। प्रत्याख्यान करने से पूर्व आपने अपनी भावना रखते हुए कहाह्न'आज मैं आचार्यश्री, युवाचार्यश्री की महान कृपा से मेरे मन के भावों को, मन के मनोरथ को पूर्ण करने की तैयारी में हूं। आज मैं दृढ़ भावों से, संकल्प शक्ति से यहां प्रस्तुत हूं। किसी ने मुझे दबाव नहीं दिया। मन की शक्ति से प्रेरित इस पथ पर अग्रसर हो रही हूं। अब मुझे अनशन कराने के लिए शीघ्रता करें, गुरुदेव का आशीर्वाद साथ है।

मैं व्यवस्थापिकाजी से नम्र निवेदन करती हूं कि अतिशीघ्र करें और मुझे गुरुदेव के आदेशानुसार आजीवन भक्त प्रत्याख्यान कराएं तथा अंत में मैं सबके साथ क्षमायाचना करती हूं, साध्वी समाज से और श्रावक समाज से भी लगभग सवा दस बजे आपने बढ़ते-चढ़ते परिणामों से संथारा पचखा।

संथारे के दूसरे या तीसरे दिन प्रदीपजी ने दर्शन किए। प्रदीप की २३ की संख्या मिल गयी यानी कि आपने २३ की तपस्या में संथारा लिया। बात मिलने पर मैंने पूछा कि अब आपका क्या कहना है? तब प्रदीप ने कहा कि मैं कल ध्यान करने के बाद में ही कुछ कहूंगा। दूसरे दिन प्रदीप ने बताया कि मैंने पहले भी २३ और २६ की संख्या बताई थी। २३ की संख्या मिल गई। अब संथारा लम्बा चलना चाहिए। २६वें दिन या फिर २६ दिन पूरे होने पर कार्य सिद्ध होगा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आलोचना : आंतरिक शुद्धि का उपक्रम

संथारे के लगभग पांच या सात दिनों के बाद में प्रसंगोपरान्त आपने कहाह्न'कुलविभाजी ने मेरे शरीर को अपना शरीर मानकर सेवा की है। इनके योग से पूरी जागरूकता के साथ समय बीता है। पांच महाव्रतों के प्रति आलोयणा करने और ८४ लाख जीव योनि को खमतखामणा करने का क्रम नियमित चालू था। साध्वीश्री नगीनाजी आदि समाधि केन्द्र की सभी साध्वियां दोपहर दो बजे से तीन बजे तक आपको गीतिका सुनाने के लिए आती थी। यह क्रम आपकी पांच की तपस्या से शुरू हुआ था ओर अंतिम दिन तक चला। साध्वीश्री नगीनाजी प्रतिदिन एक नई गीतिका बनाती। एक दिन साध्वीश्री नगीनाजी आदि साध्वियां आपको गीतिकाएं सुना रही थीं। उस समय आपकी भावधारा बढ़ी। परिणाम विशुद्धतम बने, जैसे ही उन्होंने गीतिकाएं प्रारम्भ कीं, आपने गीतिका को बीच में ही रोका। सबने सोचा कि शायद आपके बेचैनी है। सुनना अच्छा नहीं लग रहा है। उस समय आपके शारीरिक वेदना काफी थी। आपने गीतिका बीच में रोककर साध्वीश्री नगीनाजी से कहा कि आप मुझे खोल खोलकर पांच महाव्रतों की आलोयणा करावें। तब साध्वीश्री नगीनाजी ने सभी साध्वियों के बीच और भाई-बहनों के बीच में आपको अच्छी तरह से पांचों महाव्रतों की आलोयणा करवाई। और जहां मिच्छामि दुक्कड़ं बोलना होता आप अपनी पूरी शक्ति लगाकर मिच्छामि दुक्कडं बोलती। सरल हृदय से आपने महाव्रतों की आलोयणा की। पवित्र भावधारा से आलोयणा कर आप निर्मल हो गई। सबसे पहले आपने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री, साध्वीप्रमुखाश्री से सरल हृदय से अन्तःकरण से खमतखामणा किए। राज में वर्षों तक रहने से, राज की सभी साध्वियों से क्षमायाचना की। फिर समाधिकेन्द्र की सभी साध्वियों से और चाकरी में पधारी साध्वीश्री नगीनाजी आदि सभी साध्वियों से क्षमायाचना की। इसके बाद पूरे धर्मसंघ से आपने खमतखामणा किए। मेरे से विशेष रूप से क्षमायाचना की और कहा इन्होंने मेरी खूब सेवा की है। बाद में बीदासर के श्रावक-श्राविकाओं से खमतखामणा किया। इसके बाद अपने संसारपक्षीय परिवारह्नबहनें, भतीजे, भतीजे की बहुएं आदि समस्त पारिवारिकजनों से भी क्षमायाचना की। सचमुच उस समय का दृश्य देखने लायक था। सभी आपसे खमतखामणा कर रहे थे। आंखों के आंसू की धारा बह चली। कितनी आत्मा निर्मल बनाई आपने। उस

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दिन का दृश्य विलक्षण था। ऐसा लगा कि इस प्रकार सबसे खमतखामणा कर, आलोयणा कर आप पवित्र बन गई। आपके चारों तरफ एक पवित्र आभामंडल का निर्माण हो गया। आपने गुरु के बहुत गुणगान किए। आपने कहा कि मैं आज जो बोल रही हूं और मेरे जो संथारा चल रहा है, उसमें मेरी कोई शक्ति नहीं है। मुझे शक्ति, ऊर्जा और आशीर्वाद आचार्यश्री, युवाचार्यश्री और साध्वीप्रमुखाश्री से प्राप्त हो रहा है। आपश्री की शक्ति काम कर रही है। साध्वीप्रमुखाश्री की मेरे पर अनन्त अनन्त कृपा है। गणाधिपति श्री तुलसी के मेरे ऊपर दोनों हाथ हैं।

वीरभूमि में लगा तप का मेला

संथारे में यात्रियों का आवागमन सुबह से शाम तक चलता रहता। लगभग १५०-२०० संघ आपके दर्शन करने आएं। गुरुदेव लाडनूं में विराजते थे। व्याख्यान में युवाचार्यश्री प्रतिदिन आपके संथारे की सूचना दिलवाते फलतः लोग आपके दर्शन करने पहुंचते।

संथारे का काल दीर्घ हो गया। भविष्यवाणियां होने लगीं। कोई कहता ५२ दिन, कोई ४० दिन कोई ४४ दिन, कोई ६० दिन आदि-आदि। कोई कुछ कहता, कोई कुछ कहता, लेकिन आप इन सब बातों से बेखबर थी। आपका कहना था कि संथारा कितना भी आए, मुझे क्या चिंता है? अच्छा है लम्बा आए तो संयम जीवन का पालन हो रहा है। आपके पूर्ण चित्त समाधि थी। जैसे-जैसे संथारे की समयावधि बढ़ती गई लोगों का तप के प्रति आकर्षण भी बढ़ता जा रहा था। हर दिन मानो तपोत्सव था।

आनंदो मे वर्षति-वर्षति

३.९.२००९ की शाम ५.५८ के समय आपकी आंख लगी हुई थी। मैंने आपको पानी पिलाने के लिए उठाना चाहा तब आपने कहाह्नमैं जैसे सोई हुई हूं वैसे मुझे सोये रहने दो। उस समय मैंने पानी नहीं पिलाया और आपके पास बैठी रही। थोड़ी देर में आपने स्वयं आंखें खोली और बतायाह्न'तुमने जिस समय मुझे जगाना चाहा उस समय मानो ऐसा अच्छा अनुभव हुआ कि मैं एक ऐसे स्थान पर आ गई हूं जो बहुत ही अच्छा है और एक खम्भा दिखाई देता है। वह खम्भा चमकते हुए रेशम की डोरी से पूरा बंधा हुआ है। उस समय इतने आनन्द की अनुभूति हुई जिसे मैं बता नहीं सकती। उस समय शरीर में जो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वेदना थी, जी घबरा रहा था, वह भी पता नहीं चला कि कहां गया। ऐसा लगा कि मानो कोई रोग शरीर में है ही नहीं, सिर्फ आनन्द ही आनन्द है।

ठीक इसके दूसरे दिन यानी ४.९.२००९ को दोपहर एक बजे स्वप्न में एक अनुपम रमणीय सुन्दर बगीचा दिखाई दिया और गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी दोनों हाथों से आशीर्वाद देते हुए दिखाई दिए।

४.९.२००९ को शाम ७.५० के समय आपने स्वतः बताया कि आज अभी मैं देवलोक में जाकर आई हूं पर मुझे यह नहीं पता चला कि मैं किस देवलोक में जाकर आई हूं।

आपके अंतिम समय तक जागरूकता थी। चेतन अवस्था में आप अपनी साधना समताभाव से कर रही थी। १४.९.२००९ को प्रदीपजी ने वापिस आपके दर्शन किए। मैंने उन्हें लोगों के द्वारा की गई भविष्यवाणियां बतलाई। प्रदीप ने कहा मेरी धारणा में तो २६ का आंकड़ा बैठता है और फिर देखते हैं।

आपके उल्टी का प्रकोप बहुत ज्यादा रहा। दिन में १०-१५ उल्टियां हो जाती। रोज रात को भी कई बार उल्टियां होती जिससे आपकी शक्ति क्षीण होती जा रही थी। बोलना भी धीरे-धीरे कम होता जा रहा था। बहुत आवश्यक होता उस समय ही कुछ बात बोलती अन्यथा आप शान्त भाव से सोयी रहती।

शोध से बोध संभव

आपकी १३.९.२००९ से आवाज बिल्कुल बंद हो गई। कोई बात होती तो आप इशारे से कहती। १५.९.२००९ को महालचंदजी घोड़ावत ने सुबह दर्शन किए तब उन्होंने मुझको एक तरफ बुलाकर कहा कि साध्वी सूरजकुमारीजी की आवाज तो बंद हो गई है। ''आपने इनको कोई ज्ञान हुआ है या नहीं, जानने की कोशिश की है क्या? क्योंकि सुना हुआ है कि आवाज बंद होने के बाद कोई ज्ञान होता है और इन्होंने वेदना को समता भाव से सहन किया है। इतना लम्बा संथारा, संलेखना कोई कम बात नहीं। यदि कोई ज्ञान हो जाए तो बड़ी बात नहीं है।'' आप समय देखकर जानने का प्रयत्न तो करो। मैंने घोड़ावतजी द्वारा कही हुई बात को किसी से नहीं कहा। उसी रात यानी की १५.९.२००९ को रात्रि के लगभग ९.५० के समय आपने मेरे कंधे पर हाथ रखकर कुछ कहना चाहा लेकिन आवाज बंद होने के कारण कुछ नहीं बोल पा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रही थीं। आपसे पूछा गया कि आप कुछ कहना चाहती हैं तब आपने गर्दन को हिलाकर हां कहा। आपने लगभग १५ मिनट तक जीभ को उलटकर कुछ बोलने का प्रयत्न किया लेकिन बोल नहीं पाईं। उसी समय मुझे घोड़ावतजी की बात याद आ गई और आपसे पूछा कि आपको कोई ज्ञान हुआ है क्या? तब आपने गर्दन हिलाकर स्वीकृति दी। आपसे पुनः पूछा गया कि कौनसा ज्ञान हुआ है? आपने जीभ को उलटकर काफी समय तक बोलने का प्रयत्न किया। उस समय पास में साध्वी सौम्यप्रभाजी भी बैठी हुई थी। उन्होंने भी आपसे बोलकर कहने को कहा लेकिन आप बोल नहीं सकी। मैंने कहा कि आप प्रयत्न करें, बोलने की चेष्टा करें लेकिन आपकी सारी कोशिश बेकार गई। कौनसा ज्ञान हुआ है, यह बताने की इच्छा होते हुए भी आप नहीं बता पाई।

१४.९.२००९ से आपकी शक्ति क्षीण होने का समाचार साध्वीप्रमुखाश्रीजी के पास पहुंचा। आपने कृपा करके सन्देश भेजा। सन्देश को सुनकर आपके मन में हर्ष हुआ और बार-बार उस सन्देश को माथे पर लगाया।

१६.९.२००९ आपके सुबह से बेचैनी ज्यादा होती जा रही थी। इस बीच में कई बार आपने आलोयणा, खमतखामणा किए। पूरी रात आपको बेचैनी ज्यादा रही। १७.९.२००९ की दिन में भी काफी बेचैनी रही। फिर भी आप समता भाव में थी। १७.९.२००९ को ऐसा लगा कि आपकी चेतना बीच-बीच में कम पड़ रही है। लेकिन अधिक समय आपका जागरूकता में बीत रहा था। १७.९.२००९ को रात के नौ बजे आपको ठण्ड लगनी शुरू हुई। ठण्ड लगी तो इतनी कि पूरा बिस्तर हिल गया। पूरा शरीर ठण्ड से कम्पन करने लगा। बुखार तेज हो गई। देखा गया तो साढ़े तीन बुखार आया। उसी समय आपको कपड़े ओढ़ाए गयें। फिर भी कम्पन कम नहीं हो रहा था। रात के २.३० बजे बुखार और ज्यादा हो गई। ज्यों-ज्यों बुखार बढ़ रही थी। आपकी बेचैनी भी बढ़ती जा रही थी। प्रातः ३.३० बजे से ऐसा लगने लगा कि अब शायद ज्यादा समय नहीं निकलेगा। फिर भी मन में था कि शायद सूर्योदय होगा। ज्यों-ज्यों घड़ी आगे बढ़ती जा रही थी त्यों-त्यों समय नजदीक लगने लगा, सूर्योदय हुआ। स्थिति गंभीर बनती जा रही थी। जप की ध्वनियां पूरे कमरे में गूंज रही थी। स्थिति को देखकर आपको १८.९.२००९ को सुबह १० बजकर ५० मिनट पर चौविहार का प्रत्याख्यान करवाया गया। उस समय बाहर से देखने पर आपकी चेतन अवस्था नहीं लग रही थी। धीरे-

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

धीरे श्वास की गति मंद पड़ती जा रही थी। ग्यारह बजकर इकचालीस मिनट (११.४१) पर श्वास की गति रूक गई। सब देखते रह गए और आप देवलोक पधार गए।

उस समय सभी साध्वियां और ज्ञातिजन आपकी उपासना में उपस्थित थे। जिस समय आप देवलोक हुए, उस समय प्रदीप ध्यान की मुद्रा में बैठा था। जैसे ही आपका अंतिम श्वास आया, उस समय प्रदीप ने अपने ध्यान में आपको पद्मासन मुद्रा में बैठे हुए देखा। ऊपर से एक श्वेत रंग का विमान आया और उसमें आपको ऊपर पधारते हुए देखा। उसी समय प्रदीप ने आपके सिरहाने के पास पितरजी महाराज को भी देखा। २६ की संख्या भी मिल गई। १८.९.२००९ को १०.१५ को संथारे के २५ दिन पूरे हुए २६वां दिन प्रारम्भ हो चुका था। प्रदीप ने पहले बताया था कि या तो २६वें दिन या २६ दिन पूरे होकर संथारा संपन्न होगा। २६वें दिन आपका संथारा संपन्न हो गया। २२ दिन की तपस्या और २६ दिन का संथारा इस प्रकार संलेखना और तपस्या के कुल मिलाकर ४८ दिन पूरे हो गए।

जिनकी स्मृतियां शेष हैं

१८.९.२००९ को आपकी स्मृति सभा बीदासर में मनाई गई। १९.९.२००९ को हिरावत परिवार और बीदासर के संघ ने गुरुदेव के दर्शन किएं। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री, साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने समय दिया और आपके बारे में काफी अच्छे शब्द फरमाए। दूसरे दिन यानी कि २०.९.२००९ परिषद् के बीच व्याख्यान में आपकी स्मृति सभा का आयोजन रखा गया। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री, साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने काफी अच्छा फरमाया। लगभग एक घंटा, दस मिनट तक कार्यक्रम चला। युवाचार्यश्री ने एक दोहा भी फरमायाह्न

थेलासर की सूरजकंवरजी काम अनोखो किन्यो।
संयम जीवन लम्बो अनशन शिवपथ लामो लियो।।

बीदासर में ४८ दिन के अनशन, संलेखना में साध्वी सूरजकुमारीजी का स्वर्गवास हो गया। आज उनकी स्मृति सभा का उपक्रम परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की सन्निधि में रहा। साध्वी चान्दकुमारीजी ने दिवंगत साध्वीश्री के संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त किए।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कहाह्न'साध्वी सूरजकुमारीजी का जितना शरीर मजबूत था, उतना ही मनोबल मजबूत था। वे कला में दक्ष थीं। उन्होंने अनेक आगमों का स्वाध्याय किया।'

श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने साध्वी सूरजकुमारीजी का जीवन वृत्त प्रस्तुत करते हुए कहाह्न'साध्वी सूरजकुमारीजी ने अनशनपूर्वक समाधिमरण का वरण कर अपने जीवन को कृतार्थ कर लिया।'

उनके संदर्भ में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए श्रद्धेय आचार्यवर ने कहाह्न'साध्वी सूरजकंवरजी रतननगर के प्रतिष्ठित हीरावत परिवार से संबद्ध थीं। साध्वीप्रमुखा झमकूजी भी इसी परिवार से दीक्षित थी। साध्वी सूरजकंवरजी समर्पित साध्वी थी। सेवाभावी और कला कुशल साध्वी थी। उन्होंने अनेक साध्वियों को अनशन में सहयोग दिया। जीवन के अंतिम वर्षों में स्वाध्याय, जप आदि में संलग्न रहीं। इस बार बीदासर प्रवास में उन्हें सेवा का अच्छा अवसर मिला। श्रावण मास में उन्होंने अनशन के लक्ष्य के साथ तपस्या प्रारंभ की। संवत्सरी के दिन तपस्या के २३वें दिन उन्होंने अनशन स्वीकार किया। अनशन काल में हमने उन्हें अनेक सन्देश दिए। उन्होंने प्रवर्द्धमान परिणामों से ४८ दिन के संलेखना संथारा में समाधिमरण का वरण कर अपने जीवन को सार्थक बना लिया। उनके अनशन से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। साध्वी नगीनाजी आदि साध्वियों तथा साध्वी कुलविभाजी ने उनकी निष्ठा से सेवा की। बीदासर के श्रावक समाज एवं हिरावत परिवार ने जागरूकता से अपना दायित्व निभाया।

वर्ष १५, विज्ञप्ति अंक २५

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सप्तम-विभाग

परिशिष्ट १

साध्वी सूरजकुमारीजी ने राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र एवं दक्षिण भारत की यात्राएं कीं। दक्षिण भारत की आचार्य तुलसी की उस ऐतिहासिक यात्रा में आपको भी सहयात्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

बीदासर से वह यात्रा प्रारंभ हुई। राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र का स्पर्श करते हुए सं. २०२४ का चातुर्मास गुजरात की राजधानी अहमदाबाद (शाहीबाग) में हुआ और बंबई में महोत्सव। वहां से पूना जयसिंगपुर, सोलापुर, कोल्हापुर (जहां सोने की ईटें बनाई जाती हैं।) आदि क्षेत्रों में विहरण कर २०२५ का चातुर्मास तमिलनाडू-मद्रास में और महोत्सव चिदम्बरम् में किया। वहां से कन्याकुमारी, केरल, मैसूर, ऊंटी आदि क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए २०२६ का चातुर्मास कर्नाटक-बैंगलोर में एवं महोत्सव हैदराबाद में किया। वहां से नागपुर, उड़ीसा होते हुए २०२७ का ऐतिहासिक चातुर्मास मध्यप्रदेश रायपुर में हुआ। जिसमें अनेकानेक घटनाएं घटित हुईं। वहां का स्वागत और विरोध दोनों ही विलक्षण थे। रायपुर से विहार कर आचार्यप्रवर ने भिलाई, दुर्ग, राजनांदगांव, उज्जैन, कोटा, बूंदी, अजमेर आदि क्षेत्रों का स्पर्श किया। कुल मिलाकर ४ साल की उस यात्रा में सात हजार से अधिक माइलेज का विहार हुआ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिशिष्ट २

चातुर्मास प्रवास

चार वर्ष माजी महाराज की सेवा में।

* १४ वर्ष साध्वी मनोहरांजी (चूरू) के साथ।
* २ वर्ष शिक्षा के लिए सरदारशहर।
* २४ वर्ष राज में।
* इसके अलावा जहां जरूरत हुई वहां आपको स्वतंत्र चातुर्मास करवाए गए। चातुर्मास की सूची इस प्रकार हैह्न

वि.सं.	**चातुर्मास प्रवास**
२०००	आषाढ़ा
२००१	फतेहपुर
२००२	आड़सर
२००३	नोहर
२००४	देवगढ़
२००५	चाणोद
२००६	हिसार
२००७	कावड़ा
२००८	ऊमरा
२००९	तारानगर
२०१०	शार्दूलपुर
२०११	रतननगर
२०१२	कालू
२०१३	सरसा
२०१४	केलवा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२०१५	जावद
२०१६	कानोड़
२०१७	राजनगर
२०१८	रामगढ़
२०१९	चितामा
२०२०	सरदारशहर शिक्षण केन्द्र
२०२१	बीकानेर
२०२२	राज में बीकानेर
२०२३	राज में बीदासर
२०२४	राज में अहमदाबाद
२०२५	राज में मद्रास
२०२६	राज में बैंगलोर
२०२७	राज में रायपुर
२०२८	पिंपाड़
२०२९	सरदारशहर
२०३०	रतनगढ़
२०३१	सुनाम
२०३२	भुसावल
२०३३	औरंगाबाद
२०३४	संगरूर
२०३५	पटियाला
२०३६	राज में लुधियाना
२०३७	राज में लाडनूं
२०३८	राज में दिल्ली
२०३९	राज में राणावास
२०४०	राज में बालोतरा
२०४१	राज में जोधपुर
२०४२	राज में आमेट
२०४३	राज में लाडनूं
२०४४	राज में लाडनूं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

२०४५	राज में श्रीडूंगरगढ़
२०४६	राज में दिल्ली
२०४७	राज में लाडनूं
२०४८	राज में पाली
२०४९	राज में लाडनूं
२०५०	राज में राजलदेसर
२०५१	राज में श्रीडूंगरगढ़
२०५२	राज में लाडनूं
२०५३	राज में लाडनूं
२०५४	बीदासर
२०५५	बीदासर
२०५६	बीदासर
२०५७	बीदासर
२०५८	आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की सन्निधि, बीदासर
२०५९	बीदासर समाधि केन्द्र
२०६०	बीदासर
२०६१	बीदासर
२०६२	बीदासर
२०६३	बीदासर
२०६४	बीदासर
२०६५	बीदासर
२०६६	बीदासर

हीरावत परिवार से दीक्षित साध्वियां

१. साध्वीप्रमुखा झमकूजीह्वरामलालजी की पुत्री
२. साध्वी संतोकाजीह्वमांह्वचान्दमलजी की पुत्री
३. साध्वी मनोहरांजीह्वबेटी
४. साध्वी रायकंवरजीह्वधनराजजी की पुत्री
५. साध्वी चान्दकंवरजीह्वश्रीचंदजी की पुत्री
६. साध्वी सूरजकंवरजीह्वचम्पालालजी की पुत्री
७. साध्वी लोकयशाह्वमदनलालजी हीरावत की पत्नी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिशिष्ट-३

पूज्यवरों के संदेश

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

जैसे सूरज ताप और प्रकाश देता है वैसे ही साधु तपस्या से अपने आपको विशुद्ध बनाएं और अज्ञान अंधकार को मिटाएं।

६ सितम्बर, १९८६ **आचार्य तुलसी**

आमेट

अर्हम्

साध्य सिद्धि सूरज! ग्रहै साधक अपणै हाथ।
पापभीरुता पथ बहै, प्रामाणिकता साथ।।

२४ सितम्बर, १९८६ **आचार्य तुलसी**

आमेट

अर्हम्

सूर्या कुर्यात् स्वभावस्था, स्वप्रवृत्तेः प्रमार्जनम्।
येन वयप्रवृद्धायां, वार्धक्यं नाभिबाधते।।

साध्वी सूरजकुमारीजी (सूर्यकुमारी) आत्म रमण कर अपनी प्रवृत्ति का परिमार्जन करती रहे। इस क्रम से वृद्धावस्था आने पर बुढ़ापा बाधित नहीं करता।

१ मार्च, १९९७ **गणाधिपति तुलसी**

लाडनूं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (बीदासर समाधिकेन्द्र)!

श्वास के साथ नवकार मंत्र की माला का जाप करे। २०-२५ मिनट।

१८ अक्टूबर, २००३ **आचार्य महाप्रज्ञ**

सूरत

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आत्मा की शुद्धि पर विशेष ध्यान दो समभाव की साधना बढ़ती रहे।

२४ अप्रैल, २००९ **आचार्य महाप्रज्ञ**

बीदासर

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

तुमने जिस मनोबल के साथ तपस्या शुरू की है। वह बहुत विशिष्ट है। अब निरन्तर आत्मा के प्रति जागरूक रहो। जितना संभव हो, उतना कायोत्सर्ग का प्रयोग करो और उसमें आत्मा भिन्न शरीर भिन्न का चिन्तन करो।

१७ अगस्त, २००९ **आचार्य महाप्रज्ञ**

लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

हमारे धर्मसंघ की कलाकार साध्वियों में एक अच्छी साध्वी है। मुखवस्त्रिका आदि में प्रथम नंबर था और भी काम किया है। लम्बे समय तक साथ रही। फिर चलने की कठिनाई से स्थिरवास करना हुआ। जन्मदिन संवत्सर का व संथारा भी उसी दिन। दोनों का एक दिन होना बड़ी बात है। भाग्यशाली साध्वी है। अच्छी जागरूक साध्वी है। साध्वियों को तैयार भी कर दिया है। हीरावत परिवार अच्छा परिवार है। धर्मसंघ की सेवा करता है और विशेष करना है। साध्वीप्रमुखा झमकूजी इनके परिवार से ही है। चांदकंवरजी, लोकयशाजी इनके परिवार की है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी कुलविभा सेवा करने वाली साध्वी है। सूरजकुमारीजी से जितना ले सके, ले लें।

२७ अगस्त, २००९ **आचार्य महाप्रज्ञ**

लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (थैलासर)!

स्वास्थ्य कुछ कम अनुकूल है। स्वास्थ्य का ध्यान रखे। मानसिक प्रसन्नता बनी रहे। कायोत्सर्ग, जप आदि का प्रयोग भी चले। खूब मनोबल बना रहे।

९ सितम्बर, २००५ **युवाचार्य महाश्रमण**

अध्यात्म साधना केन्द्र, दिल्ली

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आपने धर्मसंघ की सेवाएं की हैं। आप गुरुकुलवास में भी रही हैं। आप वर्तमान में बीदासर समाधिकेन्द्र में स्थित हैं। शारीरिक स्वास्थ्य कुछ दुर्बल है। खूब आध्यात्मिक बल बनाए रखें। अपने जीवन का सिंहावलोकन भी करें। संयम की निर्मलता की वृद्धि हो, ऐसा अनुचिन्तन करती रहें। यथासंभव आगम स्वाध्याय, जप, ध्यान और खाद्य संयम का अभ्यास करती रहें। मंगलकामना।

९ मई, २००७ **युवाचार्य महाश्रमण**

सायरा

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

शरीर व्याधिग्रस्त है पर समाधि निरंतर बनी रहे। स्वाध्याय यथासंभव चलता रहे। कला के क्षेत्र में आपने धर्मसंघ में अच्छी सेवा की है। संयम जीवन कलामय बना रहे।

१२ अप्रेल, २००९ **युवाचार्य महाश्रमण**

बीदासर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

खूब चित्त समाधि में रहें। बीमारी का असर मन पर न हो। निर्भीकता बनी रहें। साध्वी नगीनाजी आदि साध्वियों का योग उनकी समाधि में सहायक बना रहे। जप और स्वाध्याय का क्रम यथासंभव चलता रहे।

२ जुलाई, २००९ **युवाचार्य महाश्रमण**
जैन विश्व भारती, लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

खूब चित्त समाधि में रहे। उनकी तप आराधना निर्बाध रहे। साध्वी नगीनाजी आदि साध्वियों का योग उनकी साधना में सहायक बना रहे। देह के प्रति अमूर्च्छा का भाव बना रहे। शुभाशंसा।

१२ जुलाई, २००९ **युवाचार्य महाश्रमण**
लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

तपस्या और अनशन के २८वें दिन में है। ऐसा लगता है कि उन्होंने इस आगम वाणी को चरितार्थ किया हैह्र**'लाभंतरे जीविय बूहइत्ता पच्छा परिण्णाय मलावधंसी'** जब तक शरीर से नया-नया लाभ हो तब तक उसका पोषण करें और जब नया लाभ संभावित न लगे तब संलेखना-संथारा की ओर अग्रसर हो जाएं। अब तो यही बात है कि पूर्ण समाधि बनी रहे, आत्मलीनता बनी रहे और आराधना आदि का स्वाध्याय साध्वियां कराती रहे। शुभ होगा। मोक्ष निकट हो जाएगा। अभिवादन।

२७ अगस्त, २००९ **युवाचार्य महाश्रमण**
लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

प्रलम्बायमान अनशन में स्थित है। कोई चिन्ता की बात नहीं। परिणाम विशुद्धतम बने रहें। आत्मा में रमण होता रहे। धर्मसंघ की सेवा की है, जीवन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

को धन्य बनाया है। अब परम धन्य बनने जा रही है। मंगलकामना।

१२ सितम्बर, २००९ **युवाचार्य महाश्रमण**

लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

नियति के योग को टालना किसी के वश की बात नहीं है। परमाराध्य परम श्रद्धेय गणाधिपति गुरुदेव के परिनिर्वाण की घटना सबके लिए असह्य हो रही है। पर इसे सहने के सिवाय दूसरा उपाय क्या है? आप तो दाठीक हैं, मनोबली हैं। धैर्य संजोकर रखें और अपनी साधना के प्रति जागरुक रहें

१२ जुलाई, १९९७ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

गंगाशहर

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

हम बीदासर से चले, उस समय आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। पैरों का दर्द, श्वास फूलना और जुकाम-बुखार। अब विशेष सावधानी रखें। निरन्तर आसन व प्रयोग करें। प्राणायाम का भी अभ्यास करें। संकल्प और जप भी स्वास्थ्य साधना का एक अंग है। शरीर समाधि और चित्त समाधि दोनों के लिए मंगलकामना।

२७ मार्च, १९९८ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

साध्वी सूरजकुमारीजी की भावना ज्ञात हुई। आप सेवाभावी साध्वी हैं। आपने संघ की बहुत सेवा की हैं। सेवा का कठिन से कठिन काम पड़ा है उसके लिए भी आप सदैव तत्पर रही हैं। सेवा का आपमें उल्लेखनीय गुण है। अभी साध्वीश्री कमलूजी के ऑपरेशन का एक आकस्मिक अवसर उपस्थित हुआ। साध्वीश्री कमलूजी के निकट रहनेवाली साध्वियों में एक आप भी हैं। ऐसे समय में आप उनकी सेवा करने के लिए आतुर हो, यह अस्वाभाविक नहीं है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पर इस समय इतनी अनुकूलता नहीं लगती कि आपको वहां से बुलाया जा सके। आप भावात्मक रूप से इस समय भी साध्वीश्री कमलूजी के पास ही हैं। आपकी भावना उन तक पहुंचा दी गई है।

३१ मई, १९९९ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

अभी बीदासर आना कम संभव है। आपकी भावनाएं ज्ञात हुईं। शासन-गौरव साध्वीश्री कमलूजी के चलने की स्थिति नहीं है, इसलिए लाडनूं रहना पड़ेगा। आप अपनी साधना व स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नर्सिंग होम में प्राकृतिक-चिकित्सा की बात ध्यान में आई, पर वहां व्यवस्था कैसे बैठ सकेगी। एक बार डॉक्टर से बात कर ज्ञात करें कि वहां क्या-क्या प्रयोग कराएं जाएंगे और पथ्यादिक की सुविधा कैसे मिल सकेगी? इस चिकित्सा में पानी-बिजली का अतिमात्रा में प्रयोग अपनी चर्या के अनुकूल बैठ सकेगा क्या?

आपने महिला मंडल की संभाल में भी अच्छा समय लगाया। अपनी शक्ति और समय का यथोचित व यथासंभव उपयोग करती रहें।

३ दिसम्बर, १९९९ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

जैनविश्वभारती, लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

अरइं आउट्टे से मेहावीह्वह व्यक्ति मेधावी होता है, जो अरति अर्थात् निराशा का आकुट्टन करता है। साधना के क्षेत्र में सफलता का प्रथम सूत्र है अध्यात्म निष्ठा। गुरुदेव ने इस संदर्भ में दिशादर्शन देते हुए लिखा हैह्व

मूल स्रोत है धर्म का, आत्मा की पहचान।
एके साधे सब सधे, यही परम विज्ञान।।

आत्मा की पहचान ही अध्यात्म है। आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, आगमनिष्ठा और श्रमनिष्ठाह्वइस पंचपदी को आदर्श मानकर आत्मालोचन,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आत्मनिरीक्षण करती रहें। समाधि और सफलता का सही सोपान यही है।

१ अप्रैल, २००० **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

सादर वन्दना व सुखपृच्छा। स्वास्थ्य और समाधि के लिए मंगल-कामना। यहां के निर्देशानुसार आपने तथा अन्य साध्वियों ने पूठे बनाकर भेजे। वे इतने पसन्द आए कि एक दिन में कई पूठे संतों ने ले लिए। अब साध्वी कल्पलताजी के लिखे और लिखे जानेवाले पत्रों का काम दिया गया है। सरकारी काम के प्रति आपकी निष्ठा बेजोड़ है। स्वास्थ्य ठीक रखें। अभी बहुत काम करना है। अपनी कला अन्य साध्वियों को सिखाना है। शुभम्ह्ह

१९ अक्टूबर, २००० **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

छापर

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आपकी वर्षों की प्रतीक्षा पूरी हो रही है। इस चातुर्मास में आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि आपके मनःतोष को बढ़ानेवाली होगी। शासन गौरव साध्वीश्री कमलूजी के प्रति भी आपके मन में बहुत अच्छा सम्मान का भाव है। उनकी सेवा का भी मौका मिलेगा। आप हमारे धर्मसंघ की कर्मठ साध्वी है। कोई भी कार्य-क्षेत्र हो वहां उनका सहज प्रवेश है। अब आचार्यप्रवर के आगमन का समय नजदीक है। पूर्ण स्वस्थ रहकर स्वागत की तैयारी करें। धूप से बचाव रखें। जप व अनुप्रेक्षा का प्रयोग करें।

१५ मई, २००१ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

श्रीडूंगरगढ़

अर्हम्

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आप एक कलाकार और पुरुषार्थी साध्वी हैं। आपने इन दो विशेषताओं के आधार पर धर्मसंघ की बहुत सेवा की है। समय-समय गणाधिपति गुरुदेव

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने आपके सेवा कार्यों की संघ के सामने प्रस्तुति दी है और प्रशस्ति की है।

अब आप अवस्था के अष्टम दशक में प्रवेश कर रही हैं। यह समय अन्तर्मुखी बनने का है। ध्यान, स्वाध्याय, जप, अनुप्रेक्षा आदि अनुष्ठानों से आत्मा को भावित करें। पूर्ण समाहित चित्त से जीवन के अवशेष समय को सार्थक करें, आध्यात्मिक विकास करें।

१२ अक्टूबर, २००१ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
बीदासर

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

समाधि केन्द्र, बीदासर में पूर्ण समाधिस्थ रूप में अपनी साधना आगे बढ़ाती रहें। स्वाध्याय आपकी साधना का प्रमुख अंग है। स्वाध्याय की गहराई में उतरकर आगमों के अनमोल रत्नों को हस्तगत करती रहें।

२८ अगस्त, २००२ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
प्रेक्षा विश्व भारती, अहमदाबाद (कोबा)

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आगमों के स्वाध्याय में संलग्न रहकर अपने मन की शून्यता को भर सकती है। वे चाहे तो लिखने का प्रयोग कर सकती है। बीदासर में जितनी साध्वियां हैं, उनके गुरुदेव से संबंधित संस्मरण हो तो उन्हें लिपिबद्ध कर लिया जाए।

नए सूर्योदय की आशा और प्रतीक्षा में संयम यात्रा निर्बाध चलती रहे।

१५ नवम्बर, २००२ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
प्रेक्षा विश्व भारती, अहमदाबाद (कोबा)

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी को लम्बे समय तक गुरुकुलवास में रहने का मौका मिला है। उन्होंने साध्वीश्री सुन्दरजी के संदर्भ में जिस विवेक और

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सूझबझ का परिचय दिया है, यह उनके संघीय संस्कारों का परिचायक है। बहुत अच्छी बात है। साध्वी कुलविभाजी ने भी प्रसन्नता के साथ दोनों साध्वियों की सेवा स्वीकार की। यह भी उनकी सेवा भावना का प्रतीक है। दोनों साध्वियां स्वयं समाधिस्थ रहकर साध्वीश्री सुन्दरजी की समाधि का ध्यान रखें।

३ मार्च, २००३ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
कांदिवली (मुंबई)

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

साध्वीश्री कुलविभाजी अभी समाधिकेन्द्र में आपकी सेवा में है। आचार्यप्रवर ने पूर्ण कृपाकर उनको स्वर्गीया साध्वीश्री सुन्दरजी की सेवा का मौका और दिया। स्वयं की अस्वस्थता के बावजूद उन्होंने अहोभाव के साथ गुरु के आदेश को शिरोधार्य किया। सेवा के ऐसे संस्कार तेरापंथ संघ में ही हैं। साध्वीश्री सुन्दरजी की सेवा काफी कठिन रही, फिर भी उनकी नाव पार हो गई। इस सेवाभावना के लिए साधुवाद।

साध्वी सूरजकुमारीजी कुलविभाजी के स्वास्थ्य का ध्यान रखती हैं। वे स्वयं भी जागरूक रहें। विधायक चिन्तन और जप अनुप्रेक्षा का प्रयोग कर स्वास्थ्य लाभ करो।

५ जून, २००३ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
अबरमा

अर्हम्

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

समाधि केन्द्र में आगम स्वाध्याय में सराबोर रहकर विशेष समाधि का अनुभव करती रहें। साध्वी कुलविभाजी का स्वास्थ्य कैसा है? उन्हें कैसी चिकित्सा की अपेक्षा है। पूरी जानकारी होने पर पूज्यवर को निवेदन किया जा सकता है। आपके स्वास्थ्य के प्रति मंगलकामना।

२४ सितम्बर, २००३ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
सूरत

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

जतनबाई से सूचना मिली की आपको 'लू' बहुत लग रही है। यह स्थिति ऐसी है कि इसमें बहुत बैचेनी रहती है। इसका इलाज भी किसी के पास नहीं है। प्रकृति की प्रसन्नता ही इस बीमारी का इलाज है। शीतली प्राणायाम का प्रयोग अवश्य करें। साध्वी कुलविभाजी अच्छी सेवा कर रही हैं। इसकी प्रसन्नता है। उनको आपने काफी कुछ सिखा दिया है। अब उनका शरीर भी स्वस्थ कर दें। चातुर्मास के बाद आचार्यवर लाडनूं पधार ही रहे हैं। आपके बहुत निकट हो जाएंगे। चित्त समाधि बनी रहे।

४ जुलाई, २००४ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
सिरियारी

अर्हम्

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आपने अपनी कला साधना से संघ की बहुत सेवा की है। सेवा की भावना अभी भी गतिशील है पर स्वास्थ्य पूरा साथ नहीं दे रहा है। फिर भी काम किए बिना नहीं रह सकती।

आगम तथा अन्य साहित्य के स्वाध्याय में भी आप अच्छा रस ले रही हो। अब श्वास दर्शन का विशेष प्रयोग करें। संभव हो तो दो घंटा का समय लगाएं। स्वास्थ्य और समाधि के लिए मंगलकामना।

१४ फरवरी, २००५ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

संवाद मिला कि पिछले दिनों आप अस्वस्थ हो गईं और ग्लूकोज चढ़ाना पड़ा। लगता है अब आपका शरीर कमजोर होता जा रहा है। थोड़ा ध्यान रखें। खाद्य संयम के साथ अपेक्षित आहार लेती रहें। जप व अनुप्रेक्षा का प्रयोग करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मानसिक प्रसन्नता और सबके प्रति विधायक भाव का विकास होता रहे। आगम-स्वाध्याय भी आपके लिए एक औषधि है। साध्वी कुलविभाजी का स्वास्थ्य ठीक होगा। आपकी साधना और स्वास्थ्य ठीक रहें। यही मंगलकामना है।

२८ जुलाई, २००५ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
महरौली (दिल्ली)

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आपका मनोबल मजबूत है, पर शरीर कमजोर है। अभी शूगर काफी बढ़ी हुई है। थोड़ा ध्यान रखें। मेथी आदि साधारण दवा के साथ अनुप्रेक्षा का प्रयोग करें। जप और ध्यान के द्वारा मानसिक स्वास्थ्य बना रहे, यह अपेक्षा है। शूगर और ब्लडप्रेशर की अधिकता में सलक्ष्य कायोत्सर्ग का बार-बार अभ्यास लाभप्रद होता है। साध्वी कुलविभाजी अच्छी सेवा कर ही रही है। सुस्वास्थ्य की मंगलभावना।

९ अक्टूबर, २००५ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
अध्यात्म साधना केन्द्र, नई दिल्ली

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

बीदासर से आनेवाले भाई-बहिनों से वहां के संवाद बराबर मिलते रहते हैं। साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (थैलासर) बवासीर के कारण काफी वेदना भोग रही हैं। ऐसी जानकारी मिली। पता नहीं, उनके वेदना का कितना योग है। कभी गर्मी का परिषह, कभी ब्लडप्रेशर, कभी कुछ और कभी कुछ। साध्वी कुलविभाजी उनकी सेवा कर रही है। समाधि केन्द्र में सेवा देने वाली साध्वियां भी पूरा ध्यान रखती है, पर बीमारी या वेदना को कोई नहीं बंटा सकता। डॉ. घोड़ावत वहां आए तो उससे परामर्श करें और यथासंभव चिकित्सा कराके स्वास्थ्य लाभ करें। गुरुदेव द्वारा रचित पद्य की अनुप्रेक्षा करती रहें।

आनन्दो में रोमणि रोम्णि,
प्रवहतु सततं मनः प्रसत्तिः।
स्वस्थः स्वस्थोऽहमिति च मन्ये,
कायोत्सर्गे सुखं शयानः।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जतनबाई बीदासर दर्शन करेंगी तब उनसे यहां के सारे संवादों की अवगति हो सकेगी।

२८ सितम्बर, २००६ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
भिवानी

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

इन वर्षों में आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। फिर भी आप जप स्वाध्याय करती रहती हैं और साध्वी कुलविभाजी को कला साधना में आगे बढ़ा रही हैं। अब स्वास्थ्य की अनुप्रेक्षा विशेष रूप से करें। प्रसन्न और समाधिस्थ रहें।

८ मार्च, २००७ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

बीदासर से आनेवालों से जानकारी मिली कि आपके किडनी की समस्या बढ़ रही है। यह भी बताया कि चिकित्सा की दृष्टि से कहीं जाने की या ऑपरेशन कराने की मानसिकता नहीं है। वास्तव में कष्ट सहिष्णु साधक ही ऐसी बात सोच सकता है। आपका मनोबल अच्छा है और अच्छा बना रहे। वहां उपलब्ध कल्पनीय चिकित्सा का उपयोग किया जा सकता है। जप और अनुप्रेक्षा का प्रयोग करती रहें। साध्वी कुलविभाजी पूरी निष्ठा के साथ सेवा कर रही है। चाकरी में नियुक्त साध्वियां भी उनकी समाधि का पूरा ध्यान रखें।

९ अप्रेल, २००७ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
देसूरी

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

इन वर्षों में आपके स्वास्थ्य की स्थिति जटिल हो रही है, फिर भी आपका मनोबल ठीक है। चिकित्सा की दृष्टि से कहीं अन्यत्र जाने की बात अस्वीकार कर आपने बहुत दृढ़ता का परिचय दिया है। ऐसे समय में ही धैर्य

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

और मनोबल की कसौटी होती है। ब्लड-प्रेशर, किडनी आदि की समस्याएं अब भी हैं। यथाविधि उपचार कराएं। जप, ध्यान, और अनुप्रेक्षा का आलम्बन लेकर अंतर्मुखता बढ़ाएं। साध्वी कुलविभाजी उत्तर साधक के रूप में आपकी सेवा कर रही है। समाधि में रहे।

१२ मई, २००७ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
सेमड़

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

शरीर और मन दोनों से बहुत मजबूत साध्वी थीं। इन वर्षों में शारीरिक अस्वस्थता के कारण शरीर बल कमजोर होता जा रहा है। आज उनके हल्का सा पक्षघात होने का संवाद मिला। इस बात को लेकर चिन्ता नहीं, चिंतन करें। व्यथा नहीं, व्यवस्था करें। साध्वी कुन्थुश्रीजी उचित उपचार की ओर ध्यान दें। साध्वी सूरजकुमारीजी जप एवं संकल्प का प्रयोग करें। सकारात्मक बात सोचें। एक्सरसाइज को न भूलें। साध्वी कुलविभाजी उनका पूरा सहयोग कर ही रही है। अब विशेष ध्यान रखें। स्वास्थ्य लाभ के लिए मंगलकामना।

२ मई, २००८ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
जयपुर

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आपके बारे में सुजानगढ़ से आने वाले होम्योपैथिक डॉक्टर साहब ने जानकारी दी। होम्योपैथिक दवा चल रही है। दवा के साथ-साथ जप, संकल्प एवं अनुप्रेक्षा का प्रयोग करें। 'ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं' १० मिनट तक इस मंत्र का जाप करे। बीदासर सभा के अध्यक्ष बाबूलालजी वगैरह सभी लोग समाधि-केन्द्र की पूरी संभाल कर रहे हैं। सभी साध्वियां आत्मस्थ व समाधि में रहे।

१७ जुलाई, २००८ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
जयपुर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

आदरास्पद साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

तीन प्रकार का बल होता हैह्मनोबल, धृतिबल और शरीरबल। आपकी शारीरिक क्षमता घटी है पर मनोबल प्रबल रहे। इस दृष्टि से जाप एवं स्वाध्याय का आलम्बन उपयोगी है। संभव हो तो आगम-बत्तीसी के स्वाध्याय का संकल्प करें। आत्मस्थ और समाधिस्थ रहें।

१२ अप्रैल, २००९ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
बीदासर

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

पचीस-पचीस वर्ष के गणित से जीवन के चार विभाग होते हैं। आप अपने जीवन के चतुर्थ चरण में यात्रायित हैं। यह समय सम्पूर्ण संयम-यात्रा का सार निकालने का है। आपने संयम-साधना के साथ कला साधना की और सेवा-भावना से अपनी कला का उपयोग किया। इन वर्षों में स्वाध्याय करके समय को सार्थक बनाया। अब आत्मा के साथ लौ लगाएं। समता के सेतु पर आरोहण कर आत्मा तक पहुंचने का लक्ष्य बनाएं। भाव विशुद्धि एवं चित्त-समाधि बनी रहे। यही मंगलकामना है।

२४ अप्रैल, २००९ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
बीदासर

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

बीदासर से संवाद मिला है कि साध्वीश्री सूरजकुमारीजी (रतननगर) अस्वस्थ हैं। पिछले कई महिनों से उन्हें ज्वर तो रहता ही है, अब भूख भी बंद हो रही है। खाने की रुचि नहीं है। लगता है कि स्थिति कुछ जटिल हो रही है। इस स्थिति में आध्यात्मिक चिकित्सा का चिन्तन भी किया जा सकता है। केन्द्र व्यवस्थापिका साध्वीश्री नगीनाजी आदि साध्वियां तथा साध्वी कुलविभाजी सेवा के प्रति जागरूक हैं। शारीरिक सेवा के साथ मानसिक समाधि बनी रहे एवं मनोबल पुष्ट रहे, यह जरूरी है। इसके लिए जप,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा आदि का प्रयोग कराए जा सकते हैं। अनुकूलता देखकर घंटे दो घंटे के त्याग कराने में भी सजग रहें। **'समयं गोयम! मा पमायए'**ह्वइस महावीर वाणी को याद कर पल-पल आत्मरमण की स्थिति बनी रहे, यही मंगलभावना है।

१२ जुलाई, २००९ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आज पांच दिन की तपस्या है। घंटा-दो-घंटा का त्याग करके आगे बढ़ रहे हैं। यह प्रशस्त क्रम है। तपस्या के साथ भावधारा की विशुद्धि एवं समाधि की बात महत्त्वपूर्ण है। समय गर्मी का है पर मन का संकल्प मजबूत हो तो भीतर से ठंड का अनुभव होता रहता है। हरे रंग का ध्यान और शीतली प्राणायाम का प्रयोग करें। अंतर्मुखता बढ़ती रहे। **एगप्पमुहे विदिसप्पइण्णे**ह्वएक आत्मा का ही ध्यान रहे। शेष सब बातें गौण हो जाएं।

साध्वीश्री नगीनांजी आदि सब साध्वियां सेवा के प्रति जागरूक हैं। साध्वियां और बहनें उन्हें स्वाध्याय, अनुप्रेक्षा और कायोत्सर्ग कराती रहें।

६ अगस्त, २००९ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी संपूर्ण मनोबल और संकल्प बल के साथ जीवन-रण में योद्धा बन जूझ रही है। राजस्थानी में एक कहावत हैह्व'सूरा तब ही जाणिए, रण बाजै तलवार।' आप शारीरिक कष्ट, व्यथा को वीरता के साथ सहनकर महान निर्जरा करने का लक्ष्य बनाए। उत्तरोत्तर वर्धमान परिणाम के साथ लक्ष्य के करीब पहुंचे। यही मंगलभावना।

सभी साध्वियां उन्हें अधिक से अधिक आध्यात्मिक सहयोग दें।

१४ अगस्त, २००९ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

लाडनूं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आप जीवन के आठवें दशक के अंतिम पायदान पर कदम रखने की तैयारी नई विधा से कर रही हैं। सामान्यतः हर वर्षगांठ के दिन व्यक्ति जिजीविषा के साथ अपने अग्रिम वर्ष की योजना बनाता है। पर आत्मार्थी साधक ऐसा साहसिक कदम उठाता है, जिसकी कोई कल्पना ही नहीं कर सकता।

बीदासर से प्राप्त संवाद के अनुसार साध्वीश्री सूरजकुमारीजी ने परमपूज्य आचार्यवर एवं युवाचार्यवर से निर्देश प्राप्त कर संवत्सरी के दिन अन्तिम मारणान्तिक संलेखना (अनशन) स्वीकार करने की भावना व्यक्त की है। संवत्सरी को उनका जन्मदिन है। इस रूप में जन्मदिन मनाने का संकल्प कोई साहसी व्यक्ति ही कर सकता है। इस साहसिक कदम के लिए बहुत-बहुत साधुवाद। पूज्यवरों से प्राप्त ऊर्जा उनकी इस यात्रा की सफलता में सहायक बनेगी, ऐसा विश्वास है। साध्वीश्री नगीनाजी आदि सभी साध्वियां, साध्वी सूरजकुमारीजी की सहयोगिनी साध्वी कुलविभाजी, परिवार के सभी सदस्य तथा बीदासर के श्रावक-श्राविकाएं जप, भजन, अनुप्रेक्षा का प्रयोग आदि अनुष्ठानों के द्वारा उन्हें आध्यात्मिक सहयोग देते रहें।

२२ अगस्त, २००९ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**

लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

सड़सठ वर्ष की साधना का सार निकालते हुए आपने सिंहवृत्ति से जो अभिक्रम किया है, वह जीवन समरांगण के मोर्चे पर डटने के समान है। धन्य है आपका मनोबल और धन्य है आपका संकल्पबल। जिन साध्वियों को सेवा करने और इस अभिक्रम में सहयोग करने का मौका मिला है, वे भी धन्य हैं।

परमपूज्य आचार्यप्रवर एवं युवाचार्यश्री की असीम कृपा से आपकी यह साहसिक यात्रा आगे बढ़ रही है। इस यात्रा में हर पल समाधि बनी रहे। शारीरिक वेदना में भेद विज्ञान की अनुप्रेक्षा कर परम समाधि का अनुभव करें।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आत्मा का ध्यान, आत्मा का चिन्तन और परम की प्राप्ति में एकलयता बनी रहे, यही मंगल कामना है।

२ सितम्बर, २००९ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
लाडनूं

अर्हम्

साध्वीश्री सूरजकुमारीजी!

आपने जिस सिंहवृत्ति से अनशन स्वीकार किया, उसी सिंह वृत्ति से आपकी यात्रा आगे बढ़ रही है। **'जाए सद्धाए णिक्खंतो तमेव अणुपालिया'ह्न**इस आगम वाक्य को आधार बनाकर आपने अपनी भावधारा वर्धमान रखी है। अब शरीर की शक्ति क्षीण हो रही है। उस अनुपात में आत्मा की शक्ति बढ़ाएं। आत्मा का ध्यान करे। आत्मा से लौ लगाए। **एगो में सासओ अप्पा णाणदसणसंजुओ**ह्नएक आत्मा ही अपनी है। ज्ञान-दर्शनमयी आत्मा का ध्यान ही आरोहण की दिशा है। पूरी तन्मयता के साथ आगे बढ़ो और आत्मा का आध्यात्मिक विकास करो, यही मंगलकामना है।

१४ सितम्बर, २००९ **साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा**
लाडनूं

अर्हम्

साध्वीप्रमुखा झमकूजी महासतीजी हीरावत परिवार से संबद्ध रही हैं। उनके कारण परिवार को भी गौरव का अनुभव होता रहा है। परिवार से और भी कई दीक्षाएं हुई हैं। मुझे ऐसा लगता है। दीक्षा लेनेवाले तो संघ के प्रति समर्पित रहते ही हैं, परिवार के प्रायः सभी सदस्य धर्म के प्रति, गण के प्रति, गणपति के प्रति आस्थावान हैं। समय-समय पर सेवा दर्शन का लाभ उठाते रहते हैं। केन्द्र में भी सेवा करते हैं। कुछ लोगों को तो अच्छा तत्त्वज्ञान भी हैं। अब सबको एक मौका मिला है। विशेष मौका साध्वी सूरजकुमारीजी के जीवन से जीवन की नश्वरता का बोध पाठ मिला है। वे हमारे धर्मसंघ की एक दाठीक साध्वी रही हैं और उन्हें गुरुदेव की कृपा से बहुत वर्षों तक गुरुकुलवास में रहने का मौका मिला है। प्रायः बहिर्विहार में जाने के बाद यहां रहने का मौका कम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वियों को मिलता है। साध्वी सूरजकुमारीजी को यह मौका मिला और यहां रहकर इन्होंने अपनी उपयोगिता प्रमाणित की। ऐसे नहीं कि रहना था, रह गई। आगम के स्वाध्याय में उनकी सहज रुचि रही है। बत्तीस आगमों का अध्ययन करना एक बड़ी बात है। इन्होंने अपने इस जीवन में चार बार बत्तीस ही आगमों का पारायण किया। यह भी एक विशेष उपलब्धि है। युवाचार्यश्री तो साधु-साध्वियों को फरमाते हैं कि ''एक बार जो बत्तीस आगमों का वाचन कर लेता है, मुझे ऐसा लगता है कि कम से कम उसका एक भव तो कम हो ही जाएगा।'' चार-चार बार जिन्होंने बत्तीसी का पारायण किया है, बड़ी बात है। कुछ सूत्र तो कई बार पढ़ लिए हैं। स्वामीजी का साहित्य भी पढ़ा है और भी साहित्य पढ़ने की खूब रुचि रही है। इसके साथ-साथ वे हमारे धर्मसंघ की कलाकार साध्वी भी रही हैं। चाहे रंग-रोगान करना होह्वपातरी-रोगन, मुखवस्त्रिका का काम हो, रजोहरण बनाना हो सब में माहिर थी। शायद कोई भी ऐसी कला नहीं होगी जो उनसे अज्ञात रही हो। इस बार जब हम बीदासर में थे तो साध्वी कल्पलताजी ने कहा कि स्याही, हिंगलू, सब तो उपलब्ध है, सफेदा कैसे बनता है, वह पता नहीं है। तब साध्वी सूरजकुमारीजी ने, जो इतनी अस्वस्थ थी, लम्बे समय से बुखार आ रही थी, उठना, बैठना मुश्किल था, फिर भी कहा लो, इसमें क्या बात है, अब बना देती हूं और दो दिनों में सफेदा बनाकर के तैयार कर दिया। जो काम करती, बड़ी शीघ्रता से करती। काम देकर वापस पूछना नहीं पड़ता कि भई कितने दिन लगेंगे? हम कल्पना करते कि यह काम इतने दिनों में होगा, उससे पहले ही काम पूरा हो जाता। उन्होंने एक और अच्छा काम किया। साध्वी कुलविभाजी को कई कार्यों में कलाकार बना दिया। मैं सोचती हूं कि इन सब कलाओं से भी बड़ी कला उनमें है, वह है जीवन जीने की कला। अब तो वे मृत्यु की कला को साध रही हैं वही सबसे बड़ी कला है।

भगवान महावीर ने जो मृत्यु की कला का एक उपक्रम प्रस्तुत किया, उस कला को वे साक्षात रूप से साध रही हैं। यह उनके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। अस्वस्थता की जो स्थिति है, कभी बुखार, कभी ब्लडप्रेशर, कभी शुगर, कभी कुछ, कभी कुछ। मन में सोच लिया वो सोच लिया। दृढ़ता के साथ वे अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं। संवत्सरी के दिन, अपने जन्मदिन के दिन, ऐसी जागरूकता के साथ, पुरुषार्थ के साथ अनशन पथ स्वीकार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

किया, संथारा स्वीकार किया और परमपूज्य आचार्यवर ने भी भरी सभा में, पर्युषण की भरी सभा में उल्लेख किया कि ''भाग्यशाली है यह साध्वी।'' गुरुदेव स्वयं अपने मुखारविन्द से फरमादें तो इससे बड़ी तो कोई बात नहीं है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

(ज्ञातिजन द्वारा दर्शन करने पर दिया गया उद्‌बोधन)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org